SACHCHA RAHI · ISSN 2582-4007 · VOL 24 · ISSUE 01 · MARCH 2025

हिन्दी मासिक

मार्च 2025

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

माहे रमज़ान और क़ुरआन

हज़रत मुजद्दिद अल्फ सानी रह0 अपने एक मकतूब में तहरीर फरमाते हैं :- "इस महीने को कुरआन मजीद के साथ बहुत खास मुनासबत है और इसी मुनासबत की वजह से कुरआन मजीद इसी महीने में नाज़िल किया गया, यह महीना हर क़िस्म की खैर व बरकत का जामे है, आदमी को साल भर में जितनी बरकतें हासिल होती हैं वह इस महीने के सामने इस तरह है जिस तरह समुद्र के मुक़ाबिले में एक क़तरह, क़ाबिले मुबारकबाद हैं वह लोग जिनसे यह महीना राज़ी होकर गया और नाकाम व बदनसीब हैं वह जो उसको नाराज़ करके हर क़िस्म के खैर व बरकत से महरुम हो गये " ।

शेख अहमद सरहिन्दी मुजद्दिद अल्फ सानी रह0)

एक प्रति ₹40/=

वार्षिक ₹400/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
0522–2740406 (8:00 am to 1:00 pm)
E-mail:sachcharahi@nadwa.in
https://sachcha-rahi.nadwa.in/

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 40/-
वार्षिक	₹ 400/-
विदेशों में (वार्षिक) 60 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

मार्च 2025 वर्ष 24 अंक 01

रमज़ानुल मुबारक

अल्लाह का इरशाद है किः–

रमज़ान का महीना वह है जिसमें कुरआन उतारा गया जो लोगों के लिये हिदायत (मार्गदर्शन) है और उसमें रास्ता पाने और (सत्य–असत्य में) अन्तर करने की खुली निशानियां हैं, तो जो इस महीने को पा ले वह रोजा रखे और जो बीमार हो या यात्रा पर हो वह दूसरे दिनों से गिनती (पूरी) करे, अल्लाह तआला तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख़्ती नहीं चाहता और इसलिए तुम गिनती पूरी करो और अल्लाह की बड़ाई बयान करो, इस पर कि उसने तुम्हें सत्यमार्ग दिखाया (हिदायत दी) और ताकि तुम शुक्र करने लगो। (सूरः बक़रा–185)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताहा अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

क़ुरआन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
ख़ैर व बरकत का मुबारक महीना	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	09
समाज की बुराईयाँ	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	12
रमज़ानुल मुबारक एक अज़ीम	मौलाना मुफ़्ती मो0 तकी उस्मानी	14
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	16
महा कुंभ विपत्ति के समय मुसलमान	इं0 जावेद इक़बाल	18
मुसलमान और सरकारी नौकरी	शमीम इक़बाल खाँ	21
ईद के दिन की सुन्नतें	इदारा	22
रोज़ा और स्वास्थ्य	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	23
तरावीह की नमाज़ और ऐतिकाफ़	इदारा	25
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	29
मक्कारी और अय्यारी	अब्दुल गफ़्फार सिद्दीक़ी	31
ईद का जोड़ा	मायल ख़ैराबादी	33
वफ़ादारी	इदारा	34
ईदुल फित्र का संदेश	मौलाना इक़बाल नदवी	36
ऐलाने मिल्कियत	इदारा	38
स्वास्थ्य	डॉ0 विभू पाण्डेय	39
अहले ख़ैर हज़रात से	इदारा	40

कुरआन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-हिज्रः-

अनुवादः—

और ज़मीन को हमने फैला दिया और उसमें भारी (पहाड़) रख दिये और हर चीज हमने उसमें पूरे संतुलन के साथ पैदा की[1](19) और हमने उसमें तुम्हारे लिए जीवन के साधन रखे और उनके लिए भी जिनको तुम रोजी देने वाले नहीं हो(20) और कोई चीज ऐसी नहीं है जिसके खजाने हमारे पास मौजूद न हों और हम उसकी निर्धारित मात्रा ही उतारते हैं(21) और हम ही ने पानी से लदी हुई हवाएं भेजीं फिर ऊपर से पानी बरसाया तो तुम्हें उससे पिलाया और तुम उसके खजानेदार न थे[2](22) और हम ही हैं जो जिन्दा करते हैं और मारते हैं और हम ही हैं जो सबके वारिस (उत्तराधिकारी) हैं(23) और तुममें आगे निकल जाने वालों को भी हमने जान रखा है और पीछे रह जाने वालों को भी जानते हैं(24) और बेशक पालनहार ही उनको इकट्ठा करेगा निश्चित ही वह बड़ी हिकमत रखता है खूब जानता है(25) और हमने इंसान को सने हुए गारे की खंखनाती मिट्टी से पैदा किया(26) और हमने उससे पहले जिन्न को लू की आग से पैदा किया(27) और जब आपके पालनहार ने फरिश्तों से कहा कि मैं सने हुए गारे की खंखनाती हुई मिट्टी से इंसान पैदा करने वाला हूं(28) फिर जब मैं उसको पूरा कर लूं और उसमें अपनी रूह (प्राण) फूंक दूं तो तुम सब उसके आगे सज्दे में गिर जाना(29) बस सब के सब फरिश्तों ने सज्दा किया(30) सिवाय इब्लीस के, उसने सज्दा करने वालों में शामिल होने से इनकार कर दिया(31) (अल्लाह ने) कहा ऐ इब्लीस! तुझे क्या हुआ कि तू सज्दा करने वालों में शामिल न हुआ(32) वह बोला मैं वह नहीं कि एक इंसान को सज्दा करूं जिसे तूने सने हुए गारे की खंखनाती मिट्टी से पैदा किया[3](33) कहा तो तू निकल यहां से निश्चित ही तू मरदूद (धिक्कारा हुआ) है(34) और बदले के दिन तक तुझ पर फिटकार है(35)) वह बोला ऐ मेरे पालनहार! फिर तू मुझे उस दिन तक मोहलत दे दे जिस दिन यह उठाए जाएंगे(36) कहा बस ठीक है तुझे मोहलत है(37) उसी निर्धारित समय के दिन तक(38) वह बोला ऐ मेरे रब! जैसे तूने मुझे रास्ते से हटाया है मैं भी जरूर उनके लिए जमीन में आकर्षण पैदा करूंगा और उन सबको गुमराह करके रहूंगा[4](39) सिवाय उनमें तेरे चुने हुए बंदों के(40) कहा यह मेरी ओर (आने वाला) सीधा रास्ता है(41) रहे मेरे बंदे तो निश्चित रूप से तेरा उन पर कुछ ज़ोर न चलेगा सिवाय उनके जो टेढ़ी राहों में तेरी राह चलें(42) और दोजख़ उन सबका निर्धारित ठिकाना है(43) उसके सात दरवाजे हैं और हर दरवाज़े के लिए उनमें हिस्सा बंटा हुआ

है[5](44) बेशक परहेजगार बागों और नहरों में होंगे(45) सलाम करते हुए इत्मिनान से प्रवेश करो(46) और उनके सीनों में जो भी रंजिश (अप्रसन्नता) होगी वह भी हम दूर कर देंगे आमने सामने मसहरियों पर भाइयों की तरह (बैठे होंगे)(47) न वहां थकन का नाम होगा और न ही वे वहां से निकाले जाएंगे(48) मेरे बंदों को बता दीजिए मैं ही हूं बड़ा माफ करने वाला बहुत ही दया करने वाला(49) और मेरा ही अजाब बड़ा दुखद अजाब है[6](50) और उनको इब्राहीम के अतिथियों की कहानी सुना दीजिए(51) जब वे उनके पास आए तो उन्होंने सलाम किया (इब्राहीम ने) कहा तुमसे हमें डर महसूस होता है[7](52)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. अल्लाह ने समुद्र पर धरती बिछाई तो वह डोलती थी फिर उसको जमाने के लिए उस पर बड़े–बड़े पहाड़ रख दिये और हर चीज पूरे संतुलन के साथ पैदा की, इसमें कोई भी चीज कम या ज़्यादा हो तो इंसान का जीवन कठिन हो जाये, फिर हर चीज की रोजी अल्लाह ने पहुंचाई है, इंसान को भी और हर जीव को जिनको इंसान रोजी नहीं पहुंचा सकता।

2. कितनी बड़ी मात्रा पानी की अल्लाह ने धरती में रख दी, अगर वह पानी बिल्कुल धरती की तहों में पहुंचा दे तो कौन उसको निकाल सकता है, अगलों को पिछलों को सबको जानने वाला है, फिर सबको हश्र के मैदान में जमा करेगा।

3. इंसान को मिट्टी से पैदा किया जिसके स्वभाव में झुकना है और जिन्नात को आग से पैदा किया जिनके स्वभाव में उठना और अकड़ना है नम्रता को पसंद किया और घमण्ड को अपने दरबार से धिक्कार दिया।

4. हदीस में आता है कि ‘‘जन्नत को कठिनाइयों से और दोजख को इच्छाओं से घेर दिया गया है’’ शैतान का यही काम है कि वह दुनिया के स्वाद और वासनाओं (इच्छाओं) को संवार कर प्रस्तुत करता है और लोगों को फुसलाता है, अल्लाह तआला ने कह दिया कि मेरा सीधा रास्ता सामने है जो मेरे बंदे निष्ठा (इख़्लास) के साथ उस पर चलेंगे वे शैतान से सुरक्षित रहेंगे।

5. जन्नत के भी सात दरवाजे हैं और दोजख के भी, उनमें प्रवेश करने वालों को अल्लाह ने बांट रखा है कि कौन किस दरवाजे से प्रवेश करेगा।

6. न पापियों को निराश होने की आवश्यकता है, तौबा का दरवाजा हर समय खुला हुआ है और न भले लोगों को संतुष्ट होकर बैठे रहने की आवश्यकता है, हर समय डरना चाहिए, एक ओर उसकी रहमत (दया) बहुत विशाल है, दूसरी ओर उसका अजाब (दण्ड) भी बड़ा कठोर है।

7. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के डर महसूस करने की वजह यह थी कि फरिश्ते अजनबी लोगों के रूप में आये थे, खाना पेश किया तो वह भी उन्होंने नहीं खाया, हज़रत इब्राहीम अलै0 बूढ़े थे, उनके अलावा घर में केवल एक बूढ़ी महिला थीं इसलिए डरे कि कहीं यह लोग बुरे इरादे से न आये हों।

❖❖❖

समस्त पाठकों को रमज़ानुल मुबारक व ईद की दिली मुबारकबाद।

(इदारा)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

झुकाव और शिष्टाचार अपनाने का बयानः-

सद्‌व्यवहार का महत्वः—

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को फरमाते हुए सुना है कि मुसलमान अपने व्यवहार और अख़्लाक की वजह से रोज़ेदार और तहज्जुद गुज़ार के दर्जे को पहुँच जाता है।

(अबू दाऊद)

वाद—विवाद में उलझना नुक़सान से खाली नहीं:—

हज़रत अबू उमामा बाहिली रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः जिसने वाद—विवाद में उलझना छोड़ दिया चाहे वह हक़ पर ही क्यों न हो, मैं उसके लिए जन्नत के आस पास वाले घर की ज़मानत लेता हूँ, और जिस आदमी ने झूठ को छोड़ दिया चाहे मज़ाक ही में क्यों न हो, मैं उसके लिए जन्नत के अन्दर मकान दिलाने की ज़मानत लेता हूँ, और जिसके अख़्लाक़ और व्यवहार अच्छे हों, मैं उसको जन्नत के अन्दर ''आला इल्लिय्यीन'' (उच्च श्रेणी) में मकान दिलाने की ज़मानत लेता हूँ।

(अबू दाऊद)

शेखी बघारने वाले ना पसन्दीदा हैं:—

हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः क़यामत के दिन तुम में मुझे सबसे ज़्यादा पसन्द और मुझसे करीब वह आदमी होगा जिसके अख़्लाक़ और व्यवहार तुममें सब से अच्छे होंगे। और क़यामत के दिन मेरे नज़दीक सबसे ज़्यादा ना पसन्दीदा और मुझ से दूर तुम में वो लोग होंगे जो बढ़ा—चढ़ा कर, और गला फाड़—फाड़ कर लोगों के सामने बहुत देर तक बातें करने वाले हैं, और लोगों की निगाह में अपने सम्मान—इज़्ज़त और प्रभाव दिखाने के लिये अच्छे से अच्छे शब्दों और वाक्यों को प्रयोग करने वाले अहंकारी लोग हैं। (तिर्मिजी)

झुकाव अपनाने और अत्याचार से दूर रहने पर बलः—

हज़रत इयाज़ बिन हिमार रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः अल्लाह तआला ने मुझे वह्य (ईशवाणी) फरमाई है कि तुम विनम्रता और आजिज़ी अपनाओ ताकि कोई किसी पर घमण्ड न करे, और न कोई किसी पर अत्याचार करे। (मुस्लिम)

मॉफ करने से इज़्ज़त बढ़ती है:—

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः सदक़ा (दान) देने से कोई माल कम नहीं होता और माफ करने से अल्लाह तआला बन्दे की इज़्ज़त बढ़ाता है और आदमी अल्लाह की खातिर विनम्रता को अपनाता है तो अल्लाह उसे ऊँचा कर देता है। (मुस्लिम)

आसान काम को पसन्द करनाः—

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब दो कामों में अपनी पसन्द का मौका दिया जाता, और गुनाह की कोई बात न होती तो आसान काम ही पसन्द फरमाते थे और अगर गुनाह की कोई बात होती तो आप सल्ल0 सब से ज़्यादा उससे दूर रहते थे। आप सल्ल0 ने कभी अपने लिये बदला नहीं लिया, अगर अल्लाह की हुर्मतों (मान—सम्मान, कुरआन व हदीस

और उसके आदेश पर आँच आने वाली कोई बात होती तो अल्लाह (की खुशी) के लिये बदला लेते। (मुस्लिम)

हुज़ूर सल्ल0 का बदला लेने से बचनाः—

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने किसी को अपने हाथ से नहीं मारा, न किसी औरत को, न गुलाम को, अलावा इसके कि अल्लाह के रास्ते में जेहाद कर रहे हों। और आपको कभी किसी से दुःख पहुंचता तो आप दुःख देने वाले आदमी से बदला नहीं लेते, मगर हाँ! जब अल्लाह तआला की हुर्मतों (आदेश) में से किसी चीज को बिगाड़ा जाता तो अल्लाह के लिये बदला लेते। (मुस्लिम)

समझदारी और बर्दाश्त की ताकतः—

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है, फरमाते हैं कि मैं अल्लाह के रसूल सल्ल0 के साथ जा रहा था, आप मोटे किनारे वाली नजरानी चादर ओढ़े हुए थे। एक देहाती आप सल्ल0 से मिला और चादर पकड़ कर बड़ी जोर से खींचा, मैंने देखा कि आप सल्ल0 के कंधे पर निशान पड़ गए, देहाती बोला— ऐ मुहम्मद! मुझे उस माल में से दो जो तुझे अल्लाह ने दिया है, आप सल्ल0 ने उसकी ओर देखा, मुस्कुराए और फिर देने का हुक्म दिया। (बुखारी व मुस्लिम)

झुकाव वाला व्यवहार अपनानाः—

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 से रिवायत है कि एक देहाती ने मस्जिद में पेशाब कर दिया, लोग उसे पकड़ने के लिए खड़े हुए, आप सल्ल0 ने फरमायाः उसको छोड़ दो और उसके पेशाब पर एक बड़े डोल में पानी ला कर बहा दो, तुम सख़्ती करने के लिये नहीं, आसानी पैदा करने के लिये भेजे गए हो। (बुखारी व मुस्लिम)

खुदा के दो पसन्दीदा गुणः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने अशज्ज अब्दुलकैस से फरमायाः तुम्हारे अन्दर दो गुण हैं और वो दोनों ही अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 को पसन्द हैं, एक बुर्दबारी (सहनशीलता) और दूसरी संजीदगी (गंभीरता)। (मुस्लिम)

पैगम्बरों का अमलः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 एक नबी (सन्देष्टा) का किस्सा बयान कर रहे थे, आप सल्ल0 के बयान करने का दृश्य इस समय मेरी आँखों के सामने है। फरमायाः उनको उनकी कौम इस कदर मारती थी कि वह लहू लुहान हो जाते थे, वे अपने चेहरे से खून पोंछते जाते थे और कहते जाते थे ऐ अल्लाह! इनको मॉफ़ कर दे, ये नहीं जानते हैं। (बुखारी व मुस्लिम)

नर्मी का महत्वः—

हज़रत आइशा रज़ि0 बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः अल्लाह तआला नर्म है, और नर्मी को पसन्द करता है, नर्मी पर वह चीज़ दे देता है जो सख़्ती और उसके अलावा किसी चीज पर नहीं देता। (मुस्लिम)

नर्मी खूबसूरती का सामान हैः—

हज़रत आइशा रज़ि० बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः जिस चीज़ में नर्मी होती है वह उसको खूबसूरत बना देती है और जिस चीज़ से नर्मी निकल जाती है उसको खराब कर देती है। (मुस्लिम)

ज़बह होने वाले जानवर की तक़लीफ का ख़्यालः—

हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः अल्लाह तआला ने हर काम को

शेष पृष्ठ ...38...पर

ख़ैर व बरकत का मुबारक महीना

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

रोज़ा इस्लाम का तीसरा रुक्न (स्तंभ):-

नमाज़ और ज़कात के बाद रोज़ा इस्लाम का तीसरा रुक्न है। और यह भी हर समझदार बालिग़ पर फ़र्ज़ है, यदि वह बीमार या सफ़र में हो तो उस समय रोज़ा छोड़ सकता है लेकिन फिर उसको दूसरे समय में पूरा करना पड़ेगा, अल्लाह ने रोज़े के लिए रमज़ान के महीने को पसंद किया है जिसको कुरआन से विशेष लगाव है, और विशेष बरकतों और रहमतों का महीना है। अल्लाह तआला फ़रमाता है ''रमज़ान का महीना वह है जिसमें कुरआन उतारा गया जो लोगों के लिए हिदायत (मार्ग दर्शन) है और उसमें रास्ता पाने और (सत्य और असत्य में) अन्तर करने की खुली निशानियां हैं तो जो इस महीने को पा ले वह रोज़ा रखे और जो बीमार हो या यात्रा पर हो वह दूसरे दिनों से गिनती पूरी करे, अल्लाह तआला तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख़्ती नहीं चाहता''।

(सूरः अल–बक़रह, आयत नं–185)

अरबी भाषा में ''रोज़े'' को ''सौम'' कहते हैं जिसका शाब्दिक अर्थ है किसी काम से रुकना और बचना, शरीअत की परिभाषा में खाने पीने और संभोग से निरंतर सुबह तड़के से सूरज डूबने तक रुकना, इसके साथ रोज़े की नीयत भी आवश्यक है, अगर रोज़े की नीयत नहीं की तो रोज़ा नहीं, हुआ, इसी प्रकार सूरज डूबने से एक मिनट पहले कुछ खा लिया तो रोज़ा नहीं हुआ।

''सौम'' अर्थात रोज़ा उन इबादतों में से है जो इस्लाम का चिन्ह और स्तंभ है, जिसकी बहुत ज़्यादा विशेषतायें हैं। इस्लाम में पूरे महीने के रोज़े फ़र्ज़ हैं और जो व्यक्ति बिला किसी उज़्र और मजबूरी के रमज़ान का एक रोज़ा भी छोड़ दे तो वह बहुत सख़्त गुनहगार है। एक हदीस में है कि ''जो व्यक्ति बिला किसी माज़ूरी और मजबूरी के रमज़ान का एक रोज़ा भी छोड़ दे वह अगर उसके बदले सारी उम्र भी रोज़ा रखे तो उसका पूरा हक़ अदा न हो सकेगा''।

रमज़ान का महीना बड़ी बरकतों और रहमतों वाला महीना है जिसको पाने के लिए अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमन्ना और आरज़ू करते थे, आप सल्ल0 ने दुआ फ़रमाई ''ऐ अल्लाह! रजब व शाबान का महीना हमारे लिए बरकत वाला बना, और हमें रमज़ान के महीने में पहुंचा दे, आप सल्ल0 ने अपनी उम्मत को ख़बरदार किया और ख़ुशख़बरी दी कि अन करीब तुम्हारे ऊपर रहमत व बरकत वाला महीना आने वाला है। नबी करीम सल्ल0 के एक बड़े और प्रसिद्ध सहाबी हज़रत समलान फ़ारसी रज़ि0 कहते हैं कि नबी करीम सल्ल0 ने शाबान की आख़िरी तारीख़ में हम लोगों को उपदेश दिया कि तुम्हारे ऊपर एक महीना आ रहा है जो बहुत बड़ा महीना है, बहुत मुबारक महीना है, उसमें एक रात (शबे क़द्र) है जो हज़ार महीनों से बढ़ कर है, अल्लाह तआला ने उसके रोज़े को फ़र्ज़ फरमाया और उसके रात के क़ियाम यानी तरावीह को सवाब की चीज़ बनाया है, जो शख़्स इस महीने में किसी नेकी के साथ अल्लाह का कुर्ब (निकटता) प्राप्त करे, ऐसा है जैसा कि रमज़ान के अतिरिक्त दिनों में सत्तर फ़र्ज़ अदा किये और जो शख़्स इस महीने में किसी फ़र्ज़ को अदा करे वह ऐसा है जैसा

कि रमज़ान के अतिरिक्त दिनों में सत्तर फ़र्ज़ अदा करे, यह महीना सब्र का है और सब्र का बदला जन्नत है और यह महीना लोगों के साथ सहानुभूति का है, इस महीने में मोमिन का रिज़्क़ (जीविका) बढ़ा दिया जाता है, जो शख़्स किसी रोज़ेदार को रोज़ा इफ़्तार कराए उसके लिए गुनाहों के माफ़ होने और आग से आज़ादी का साधन होगा और रोज़ेदार के सवाब के समान उसका सवाब होगा, मगर उस रोज़ेदार के सवाब से कुछ कम नहीं किया जायेगा। सहाबा रज़ि0 ने अर्ज़ किया या! रसूलुल्लाह हममें से हर शख़्स तो इतनी हैसियत नहीं रखता कि रोज़ेदार को इफ़्तार कराए? तो आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि (पेट भर खिलाने पर निर्भर नहीं) यह सवाब तो अल्लाह तआला एक खजूर से कोई इफ़्तार करादे या एक घूँट पानी पिला दे या एक घूँट लस्सी पिला दे, उस पर अता फरमा देते हैं।

यह ऐसा महीना है कि इसका पहला हिस्सा अल्लाह की रहमत है, और बीच का हिस्सा मग़फ़िरत है और आख़िरी हिस्सा आग से आज़ादी है, जो शख़्स इस महीने में अपने नौकर और सेवक के बोझ को हलका कर दे अल्लाह तआला उसकी मग़फ़िरत फ़रमाते हैं और आग से आज़ादी फ़रमाते हैं। चार बातें बहुत ज़रूरी हैं उन्हें बराबर करते रहो, दो बातें अल्लाह को राज़ी करने के लिए, और दो बातें ऐसी जिसके बिना तुम्हें छुटकारा नहीं, पहली दो बातें जिनसे तुम अपने रब को राज़ी करो, यह कलिम–ए–तय्यिबा और इस्तिग़फ़ार की कसरत व ज़्यादती है। और दूसरी दो बातें यह हैं कि जन्नत की तलब करो, और आग यानी दोज़ख़ से पनाह मांगो, जो शख़्स रोज़ेदार को पानी पिलाये, हक़ तआला क़यामत के दिन हौज़े कौसर से उसको ऐसा पानी पिलायेंगे जिसके बाद जन्नत में दाख़िल होने तक प्यास नहीं लगेगी।

''कलिमा'' पढ़ने के बाद इन्सान पर चार प्रकार की इस्लामी इबादतें अपनी शर्तों के साथ अनिवार्य हो जाती हैं, सबका उद्देश्य एक है कि इन्सान अपने वास्तविक स्वामी और पालनहार का पूर्ण रूप से अज्ञाकारी बन्दा बने, अल्लाह ने अपनी किताब कुरआन मजीद में फ़रमा दिया कि मैंने जिन्नातों और इन्सानों को अपनी इबादत के लिए पैदा किया है, ऐसी इबादत जिसमें किसी दूसरे की साझेदारी नहीं होगी, आसमान से ज़मीन तक, दरयाओं से पहाड़ों तक पूरे जल थल में अल्लाह एक ही है।

इस समय हमारी आपकी बात केवल ''रोज़ा'' और रमज़ान की चल रही है, ''सच्चा राही'' का यह अंक जिस समय आपके पास पहुँचेगा आप रोज़े की हालत में होंगे हमारी दिली इच्छा है कि हम और आप वास्तविक रोज़ेदार बनें, ताकि पूरी ज़िन्दगी और मरते दम तक अल्लाह के आज्ञाकारी बन्दे बन कर रहें। सामान्य दिनों में भी हर अच्छा आदमी बुरे कामों और बुरी बातों से बचने की कोशिश करता है, लेकिन रोज़े की हालत में एक रोज़ेदार बहुत सावधान रहता है कि उससे कोई ग़लत काम या ग़लत बात न हो जिससे रोज़ा ख़राब हो जाए और अल्लाह नाराज़ हो जाए, रोज़ा केवल खाना पानी छोड़ने का नाम नहीं है, बल्कि सर से पैर तक पूरे शरीर का रोज़ा है, आँख कान, ज़बान हाथ पैर शरीर के किसी अंग का ग़लत प्रयोग न हो, ज़बान को झूठ और ग़ीबत और गाली गलोज से बचाना है।

हर इबादत का अल्लाह के यहाँ सवाब और अज्र है, परन्तु रोज़े में इबादत की नीयत से खाने पीने और नफ़सानी ख़्वाहिश (काम वासना) से अपने मन को रोका जाता है और अल्लाह के वास्ते अपनी इच्छाओं और लज़्ज़तों को कुरबान किया जाता है, इसलिए अल्लाह ने उसका सवाब भी बहुत ज़्यादा और सबसे निराला रखा है।

एक हदीस में है कि:–

बन्दों के सारे अच्छे आमाल

के बदले का एक क़ानून बना हुआ है और हर अमल का सवाब उसी हिसाब से दिया जाएगा, परन्तु रोज़ा इस क़ानून से अलग है, उसके बारे में अल्लाह तआला का इरशाद है कि ''बन्दा रोज़े में मेरे लिए अपना खाना पीना और अपनी नफ़सानी ख़्वाहिश को क़ुरबान करता है इसलिए रोज़े का बदला मैं खुद दूँगा'' एक दूसरी हदीस में है कि जो शख़्स पूरे ईमान और यक़ीन के साथ और अल्लाह तआला की रज़ामन्दी हासिल करने के लिए और उससे सवाब लेने के लिए रमज़ान के रोज़े रखे तो उसके पहले सब गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे''।

रमज़ान हर साल आता है और एक महीने के लिए आता है और अल्लाह की रहमतों और बरकतों की रात दिन बारिश होती है, उन रहमतों और बरक़तों में हमारा कितना हिस्सा होता है, यह ग़ौर करने और सोचने की बात है, यह हमारा पक्का इरादा और नीयत होनी चाहिए कि जिस तरह हमने साल के ग्यारह महीने गफ़लत और लापरवाही में गुज़ारे हैं वह मामला रमज़ान और रोज़ों के साथ नहीं होना चाहिए, ज़िन्दगी का हर पल और हर सांस अल्लाह की नेमत है, हमें अल्लाह का फ़रमाबरदार, आज्ञाकारी बन्दा बनना चाहिए इसी में दुनिया से आख़िरत तक हमारी कामयाबी और सफलता है, यदि हमने रमज़ान के महीने को अल्लाह व रसूल के आदेशानुसार गुज़ारा तो उसका फ़ायदा और उसकी बरकतें पूरे साल महसूस करेंगे, दिन के रोज़े के साथ रात की तरावीह, समय के पालन के साथ ज़रूरी है, रमज़ान का महीना सोने व खाने का न बनायें बल्कि इबादत का महीना बनाइए, रमज़ान के बाद ईद का चाँद नज़र आता है, जिसकी ख़ुशी पूरे इस्लामी जगत में मनाई जाती है। ईद की रात ''लैलुतुल जाइज़ा'' इनआम की रात कही जाती है, जब ईद की सुबह होती है तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों को तमाम शहरों में भेजते हैं यह ज़मीन पर उतर कर तमाम गलियों और रास्तों के नुक्कड़ पर खड़े हो जाते हैं और ऐसी आवाज़ जिसको जिन्नात और इन्सान के अलावा हर मख़लूक़ सुनती है, पुकारते हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत उस करीम रब की बारगाह की ओर चलो जो बहुत ज़्यादा देने वाला है और बड़े से बड़े क़ुसूर को मॉफ़ करने वाला है। फिर जब लोग ईदगाह की ओर निकलते हैं तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों से दरयाफ़्त फ़रमाते हैं, क्या बदला है उस मज़दूर का जो अपना काम पूरा कर चुका हो, वह अर्ज़ करते हैं कि हमारे माबूद और हमारे मालिक उसका बदला यही है कि उसकी मज़दूरी पूरी पूरी दे दी जाए, तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, कि ऐ फ़रिश्तो मैं तुम्हे गवाह बनाता हूँ मैंने उनको रमज़ान के रोज़ों और तरावीह के बदले में अपनी रज़ा और मग़फ़िरत अता कर दी और बन्दों से ख़िताब फ़रमा कर इरशाद होता है कि ऐ मेरे बन्दो मुझसे मांगो मेरी इज़्ज़त की क़सम मेरे जलाल की क़सम आज के दिन अपने इस इजतिमा में मुझसे अपनी आख़िरत के बारे में जो सवाल करोगे अता करूँगा और दुनिया के बारे में जो सवाल करोगे उसमें तुम्हारी मसलहत पर नज़र करूँगा, मेरी इज़्ज़त की क़सम कि जब तक तुम मेरा ख़्याल रखोगे मैं तुम्हारी ग़ल्तियों पर परदा डालता रहूँगा और उनको छुपाता रहूँगा, मेरी इज़्ज़त की क़सम और मेरे जलाल की क़सम मैं तुम्हें मुजरिमों और काफ़िरों के सामने अपमानित नहीं करूँगा, बस अब बख़्शे बख़्शाए अपने अपने घरों को लौट जाओ, तुमने मुझे राज़ी कर दिया और मैं तुमसे राज़ी हो गया। बस फ़रिश्ते इस अज्र व सवाब को देख कर जो इस उम्मत को इफ़्तार के दिन मिलता है ख़ुशियाँ मनाते हैं और खिल जाते हैं।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

समाज की बुराईयाँ और उनका इलाज

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

बदगुमानीः-

समाज की घातक बीमारियों में एक ख़तरनाक बीमारी "बदगुमानी" (दुर्भावना) है, अल्लाह ने फरमायाः–

अनुवादः– "ऐ ईमान वालो! अकसर गुमानों से बचो, निश्चित रूप से कुछ गुमान गुनाह होते हैं"।

(अल–हुजुरातः 15)

बदगुमानी एक किस्म का झूठा वहम है, जिसका नतीजा ये होता है कि बदगुमानी करने वाले को हर एक के काम में बुराई नज़र आने लगती है, न उसको किसी की नीयत ठीक नजर आती है और न किसी का काम सही नजर आता है, जिसके नतीजे में आपस में नफरतें पैदा होने लगती हैं, और दिलों में दराड़ें पड़ जाती हैं, ये बात इन्सान के मनोविज्ञान में दाखिल है कि वो आमतौर पर बदगुमान हो जाता है, बुरे विचार उसको घेर लेते हैं, किसी के बारे में अच्छा गुमान करना उस के लिए थोड़ा मुश्किल होता है, आयत में इसीलिए ये हुक्म दिया गया है कि अकसर गुमान से बचो, फिर उसकी वजह बयान कर दी कि कुछ गुमान, गुनाह की हद तक पहुँच जाते हैं, किसी के बारे में अच्छा गुमान करने से आमतौर पर नुकसान नहीं पहुंचता है, लेकिन बदगुमानी के असर कभी कभी बहुत ही सख्त होते हैं, इसीलिए बेहतर ये होता है अगर किसी के बारे में जानकारी पूरी न हो तो उसके बारे में अच्छा गुमान रखे, किसी बुरे व्यक्ति के बारे में अच्छा गुमान है तो कयामत में ये सवाल न होगा कि तूने बुरे को अच्छा क्यों समझा, लेकिन अगर किसी अच्छे व्यक्ति के बारे में बुरा गुमान है तो कयामत में इसकी पकड़ होगी, फिर भी अच्छा गुमान रखने का मतलब ये भी नहीं है कि बिना तहकीक उससे मामलात शुरू कर दे।

अगर अच्छे गुमान के नतीजे में ससते मामला किया और वो अच्छा इंसान न हुआ तो मामला करने वाला धोखा खा सकता है, धोखा देना तो बहुत बुरा गुनाह है ही, धोखा खाना भी ईमानी समझदारी के खिलाफ है, हदीस में आता हैः

अनुवादः–"मोमिन एक छेद से दोबार नहीं डसा जा सकता"।

(सहीह बुखारीः 6133)

अगर एक बार धोखा हो भी जाए तो दूसरी बार धोखा नहीं खाता, इसी तरह अगर किसी से दीनी मसलों में पूछना है तो बेहतर यही है कि उसके बारे में अच्छी तरह से मालूमात हासिल कर ली जाए और अच्छी तरह परख लिया जाए, इस्लाम के शुरू की सदियों में ये कथन लोगों के जबान पर था–

अनुवादः "ये इल्मे दीन है तो अच्छी तरह देख लो कि तुम दीन किस से हासिल कर रहे हो?" (मुस्लिम शरीफः 26)

किसी से अगर मामला करना हो, वो मामला दुनियावी हो या दीनी, उस के बारे में फौरन अच्छा गुमान रख लेना और बिना जांच परख के मामला कर लेना दीनी मिजाज के खिलाफ है और कभी कभी बड़े नुक़सान उठाने पड़ते हैं, इसलिए सबसे बेहतर शक्ल यही है कि आमतौर पर लोगों के साथ अच्छा गुमान रखा जाए लेकिन अगर किसी किस्म का लेन देन करना हो या दीन हासिल करना हो तो जब तक अच्छी तरह तहकीक न कर ली जाए उस वक्त तक मामला न किया जाए और न किसी दूसरे के सामने

उसकी गवाही दी जाए ताकि कोई दूसरा भी धोखे में न पड़े, किसी ने हजरत उमर (रज़ि०) के सामने किसी की तारीफ की तो हजरत उमर ने फरमाया कि तुम ये बात यकीन के साथ कैसे कह सकते हो? क्या तुमने उस से कोई लेन देन किया है? या तुमने उसके साथ लम्बा ज़माना गुजारा है?

(कन्जुल उम्मालः 17798)

बिना इसके तुम किसी के बारे में यकीन के साथ ऐसी बात कैसे कह सकते हो! ये बात समझ लेने की है कि दो बातें अलग अलग हैं, अच्छा गुमान करना अलग बात है, लेकिन उसकी बुनियाद पर मामला कर लेना अलग बात है, जब तक बुराई का इल्म यकीनी तौर पर न हो जाए उस वक्त तक अच्छा गुमान रखने का हुक्म है, लेकिन बिना तहक़ीक के मामला कर लेने में खतरे हैं।

इमाम अबू दाऊद (रह०) हजरत अबू हुरैरह (रज़ि0) से एक हदीस लिखते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया–

अनुवादः– "अच्छा गुमान करना अच्छी इबादत में से है।

(अबू दाऊदः 4995)

अगर ना हक बद गुमानी की है तो ये उसके हक में वबाल है, और उसके बारे में सख्त से सख्त हदीसें आयी हैं, उसके नुकसान दुनिया में भी बहुत हैं, कभी कभी बदगुमानी की बिना पर इंसान बहुत कुछ खैर से महरूम रहता है, आलिम को जाहिल समझ रहा है तो उसके इल्म से महरूम होगा, कोई ऐसा शख्स जो उसकी रहनुमाई कर सकता है, उसको सही रास्ता बता सकता है, उसको वो गुमराह समझ रहा है, और बिना तहक़ीक़ के उस से बदगुमानी का शिकार है तो वो उसकी रहनुमाई से महरूम रहेगा, कोई भी उसको नुक़सान पहुँचाने की सलाहियत रखता है, उसका खैर ख्वाह है लेकिन वो उसके बारे में बदगुमान है, तो उसके हर तरह के फायदे से महरूम रहेगा। बदगुमानी की उपरोक्त शक़्लें तो वो हैं जिनका नुकसान व्यक्तिगत रूप से खुद बदगुमानी करने वाले को हो रहा है, लेकिन आमतौर पर बदगुमानी करने वाला कदम उठाने और बदला लेने पर आमादा हो जाता है, उसके नतीजे पूरे समाज को भुगतने पड़ते हैं, बदगुमानी की जो भी किस्म हो, उसके ऐतबार से बदगुमानी करने वाला आगे बढ़ता है, और बात क़त्ल और लूट मार तक पहुँच जाती है, इस में आमतौर पर ग़लतफहमियों का दखल होता है, आदमी किसी के बारे में कोई बात सुन कर कुछ देख कर एक राय कायम कर लेता है, उस के बाद बात बढ़ते बढ़ते कहाँ से कहाँ पहुँच जाती है, उसके मर्ज के नुकसान सीमित नहीं रहते, आमतौर पर दूसरों तक पहुँचते हैं, इसी लिए इसकी सख्त मनाही की गई है और हुक्म ये दिया गया है कि लोगों में खैर और भलाई का पक्ष तलाश किया जाए, हज़रत उमर (रज़ि0) से नक़ल किया गया है कि अगर तुम्हारा मोमिन भाई कोई बात कहता है और उसको भलाई समझा जा सकता है, तो तुम बुरा खयाल मत लाओ, और उसको खैर ही समझो।

❖❖❖

अनुरोध

हम अपने पाठकों की दीनी मालूमात और धार्मिक ज्ञान को बढ़ाने के लिए ''कुरआन की शिक्षा'' और ''प्यारे नबी की प्यारी बातें'' जैसे लेख निरंतर प्रकाशित करते हैं। उनका सम्मान हमारा और आपका कर्तव्य है। इसलिए जिन पन्नों पर ये आयतें और हदीसें लिखी हैं, उनका एहतिराम हमारी दीनी जिम्मेदारी है इसका ख़्याल रखें, इंशाअल्लाह हम सवाब के मुस्तहिक़ एवं पात्र होंगे।

(इदारा)

रमज़ानुल मुबारक एक अज़ीम नेअ़मत

मौलाना मुफ़्ती मो0 तक़ी उस्मानी

रमज़ानुल मुबारक का महीना अल्लाह तआ़ला की बड़ी अ़ज़ीम नेमत है, हम और आप इस मुबारक महीने की हक़ीक़त और इसकी क़द्र व क़ीमत कैसे जान सकते हैं, क्योंकि हम लोग दिन–रात अपने दुनियावी कारोबार में उलझे हुए हैं और सुब्ह से शाम तक दुनिया ही की दौड़ धूप में लगे हुए हैं, हम क्या जानें कि रमज़ान क्या चीज़ है? अल्लाह जिसको नवाज़ते हैं और इस मुबारक महीने में अल्लाह की ओर से आने वाले अनवार व बरकात के सैलाब को जो पहचानते हैं, ऐसे लोगों को ही इस महीने की क़द्र होती है, आपने यह हदीस सुनी होगी कि नबी–ए–करीम सल्ल0 जब रजब का चाँद देखते तो दुआ फरमाया करते थे कि ऐ अल्लाह! हमारे लिए रजब और शाबान के महीनों में बरकत अता फरमा और हमें रमज़ान के महीने तक पहुँचा दीजिए अर्थात हमारी उम्र इतनी लंबी कर दीजिए कि हमें अपनी उम्र में रमज़ान का महीना नसीब हो जाए, अब आप अंदाज़ा लगाएं कि रमज़ान आने से दो माह पहले इन्तज़ार और शौक़ शुरु हो गया और उसके हासिल होने की दुआ कर रहे हैं कि अल्लाह तआ़ला यह महीना नसीब फरमा दे, यह काम वही कर सकता है जिसको रमज़ान की सही क़द्र व क़ीमत मालूम हो।

अल्लाह तआ़ला जो इन्सानों के पैदा करने वाले हैं, वह जानते थे कि यह इन्सान जब दुनिया के काम धंधे में लगेगा तो हमें भूल जायेगा और फिर हमारी इबादत का उतना ध्यान नहीं होगा जितना दुनियावी कामों के अन्दर उसका ध्यान होगा, तो अल्लाह तआ़ला ने उस इन्सान से फरमाया कि: हम तुम्हें एक मौक़ा और देते हैं, और हर साल तुम्हें एक महीना देते हैं ताकि जब तुम्हारे ग्यारह महीने इस दुनियावी काम धंधों में गुज़र जाएं, तो अब हम तुम्हें रहमत का एक खास महीना अता करते हैं और उस एक महीने के अन्दर तुम हमारे पास आओ ताकि गयारह महीनों के दौरान तुम्हारी रूहानियत (आध्यात्म) में जो कमी आ गयी है, इस मुबारक महीने में तुम उस कमी को दूर करलो, इस मक़सद के लिए हम तुम्हें यह हिदायत का महीना प्रदान करते हैं ताकि तुम्हारे दिलों पर जो ज़ंग लग गया है, उसको दूर करलो और हमसे जो दूर चले गये हो अब क़रीब आ जाओ और हमारी ओर से जो ग़फ़लत तुम्हारे अंदर पैदा हो गयी है उसको दूर करके अपने दिलों को ज़िक्र और यादे इलाही से आबाद कर लो, इसी मक़सद के लिए अल्लाह ने रमजान का महीना प्रदान किया। रोज़े के अलावा और जो इबादतें इस मुबारक महीने में बयान की गई हैं, वह सब अल्लाह तआ़ला की निकटता के अहम स्रोत हैं।

अल्लाह की निकटता हासिल करलोः–

अल्लाह का इरशाद हैः– ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फर्ज किये गये, जिस तरह तुमसे पहले लोगों पर फर्ज किए गये थे ताकि तुम्हारे अंदर तक़्वा पैदा हो।

इसलिए ग्यारह महीनों तक तुम जिन कामों में मुब्तला रहे हो, उन कामों ने तुम्हारे तक़्वे की विशेषता को कमज़ोर कर

दिया, अब रोज़े के ज़रिए इस तक़्वे की विशेषता को दोबारा बना लो, लेकिन बात सिर्फ इस पर ख़त्म नहीं होती कि रोज़ा रख लिया और तरावीह पढ़ ली, बल्कि इस रमज़ान को इस काम के लिए खास करना है कि ग्यारह महीने तक हम लोग अस्ल मकसदे ज़िन्दगी से और इबादत से दूर चले गये थे, इस दूरी को ख़त्म करना है और अल्लाह की निकटता हासिल करनी है इसका तरीक़ा यह है कि रमज़ान के महीने को पहले ही से ज़्यादा से ज़्यादा इबादात के लिए खाली किया जाए, इसलिए कि दूसरे काम–धंधे तो ग्यारह महीने तक चलते रहेंगे, लेकिन इस महीने के अंदर उनको जितना कम से कम कर सकते हो कर लो और इस महीने को ख़ालिस इबादात के कामों में लगाओ।

क़ुरआन करीम की खूब तिलावत करें:–

बहर हाल! रोज़ा तो रखना ही है और तरावीह तो पढ़नी ही है, इसके अलावा भी जितना वक़्त हो सके इबादतों में लगाओ, कुरआन की तिलावत का खास एहतिमाम करो, इसलिए कि इस रमज़ान के महीने को कुरआन करीम से खास मुनासबत है इसलिए इसमें ज़्यादा से ज़्यादा तिलावत करो, हज़रत इमाम अबू हनीफा रह0 रमज़ानुल मुबारक में रोज़ाना एक कुरआन करीम दिन में ख़त्म किया करते थे और एक क़ुरआन रात में ख़त्म करते थे, अल्लामा शामी रह0 रमज़ान के दिन और रात में एक क़ुरआन ख़त्म किया करते थे हम भी रमज़ानुल मुबारक में आम दिनों के मुक़ाबले में तिलावत की मिक़दार को ज़्यादा करें, इसी प्रकार साल के दूसरे दिनों में जिन नफ़्ल नमाज़ों के पढ़ने की तौफ़ीक़ नही होती, उनको रमज़ान में पढ़ने की कोशिश करें जैसे तहज्जुद, इशराक़, चाश्त, अव्वाबीन आदि।

सदक़ात की कसरत करें:–

रमज़ानुल मुबारक में ज़कात के अलावा नफ़्ली सदक़ात भी ज़्यादा से ज़्यादा देने की कोशिश करें, हदीस शरीफ़ में आता है कि हुज़ूर सल्ल0 की सखावत (दानशीलता) का दरया वैसे तो पूरे साल ही जारी रहता था, लेकिन रमज़ानुल मुबारक में आपकी दानशीलता ऐसी होती थी जैसे झोंके मारते हुए हवाएं चलती हैं, जो आप सल्ल0 के पास आया, उसको नवाज़ दिया, इसलिए हमें भी रमज़ानुल मुबारक में सदक़ात खूब करने की कोशिश करनी चाहिए।

अल्लाह के ज़िक्र की कसरत करें:–

इसके अलावा चलते फिरते, उठते बैठते अल्लाह तआला का ज़िक्र क़सरत से करें, हाथों से काम करते रहें और ज़बान पर अल्लाह का ज़िक्र जारी रहे। सुब्हानल्लाह, अलहम्दुलिल्लाह, ला इलाह इल्लल्लाह, अल्लाहु अक्बर, ला हौल वला कुव्वत इल्लाह बिल्लाह, खूब पढ़ते रहें, इसके अलावा दुरूद शरीफ़ और इस्तिग़फ़ार की भी कसरत करें।

गुनाहों से बचने की कोशिश करें:–

रमज़ानुल मुबारक में विशेष रूप से गुनाहों से परहेज़ करें, उससे बचने की फ़िक्र करें, यह तै करलें कि रमज़ान के महीने में यह आँख ग़लत जगह पर नहीं उठेगी, यह भी तै करलें कि इस ज़बान से ग़लत बात न निकलेगी, इंशा अल्लाह झूठ, ग़ीबत या किसी का दिल दुखाने वाली कोई बात ज़बान से न निकलेगी, रमज़ानुल मुबारक के महीने में ज़बान पर ताला डाल लें, यह क्या बात हुई कि रोज़ा

शेष पृष्ठ ..30...पर

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में

मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

इस्लाम शाहः-

शेरशाह के बेटे इस्लाम शाह (1545—1555) ने अपने उदार पिता की उदारता को अपने शासनकाल में क़ायम रखा। उसने अपने पिता ही की तरह हिन्दुओं को नौकरिया दीं, उसके राजस्व विभाग में हिन्दू ही थे। इसीलिए एक दिन उसके एक करीबी सरदार मुहम्मद फरमली ने उससे मजाक में कहा कि उसने सपने में देखा है कि आसमान में तीन थैले आए एक में मिट्टी थी, दूसरे में सोना था, तीसरे में कागज था। मिट्टी का थैला सिपाहियों के सिर पर गिरा, सोने का थैला हिन्दुओं के घर गया और कागज राजा के खजाने में रहा।

इस्लाम शाह ने अपने पिता के सामाजिक कार्यों को जारी रखा। शेरशाह ने हर दो कोस पर सरायें बनवायी थीं, इस्लाम शाह ने उन्हें और विकसित करके हर दो सरायों के बीच एक सराय और बनवायी, उसमें हिन्दू मुसलमान यात्रियों की आवश्यकता के सारे सामान उपलब्ध कराए। हर सराय में कमरा, कुँआ और रसोईघर होता जिसमें पके हुए खाने के अतिरिक्त गल्ला भी मौजूद रहता। शेरशाह ने 1700 सरायें बनवायी थीं। इस्लाम शाह ने उनको बढ़ाकर 3400 कर दिया, उसने हर सराय में दान बाँटने की भी व्यवस्था की। उसका यह भी आदेश था कि निर्धन यात्रियों और फकीरों की आवश्यकताओं की सभी वस्तुएँ सराय से मिलती रहें। शेरशाह ने भलाई के कार्यों की जितनी संस्थाएँ स्थापित कीं, शिक्षाघरों और धार्मिक संस्थाओं को जो जागीरें दीं, या जो बाग लगाए, उन सबको इस्लाम शाह ने जारी रखा।

वह ज्ञान और कला का भी बहुत सम्मान करता रहा। फारसी के साथ उसने हिन्दी भाषा की भी सरपरस्ती की। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि और माहिर संगीतकार सूरदास को भी उसकी सरपरस्ती प्राप्त रही। उसके दरबार में शाह मुहम्मद फरमली हिन्दी के एक बड़े शायर थे। बाबर के बेटे के शहजादे कामरान का विचार था कि यदि शाह मुहम्मद फरमली हिन्दी के बजाए फारसी का शायर होता, तो उसकी अपनी कविता कहने की योग्यता के कारण विश्व में ख्याति प्राप्त होती।

सूरी वंश की धार्मिक उदारता अपनी चरमसीमा को उस समय पहुँच गयी जब हेमू बक्काल प्रधानमन्त्री के पद पर आसीन हुआ। वह कस्बा रिवाड़ी का रहने वाला हिन्दू बक्काल था। इस्लाम शाह के जमाने में वह मात्र एक दुकानदार था, फिर तोशाखाना का रक्षक हो गया। इसके बाद बाजार का कोतवाल बनाया गया। आदिलशाह के ज़माने में पदोन्नति करके प्रधानमन्त्री तक पहुँच गया। अपनी समझदारी से अपने स्वामी पर इतना प्रभावी हो गया कि सभी मामलों में वही अधिकारी बना रहा। जिस सरदार को जहाँ चाहता भेज देता। उसकी जागीर अपनी इच्छा से वापस ले लेता या दे देता। वह प्रत्यक्ष रूप से बड़ा ही कमजोर और दुर्बल था। घोड़े की पीठ पर मुश्किल से बैठता। कभी तलवार मयान में नहीं रखी, लेकिन अपने असाधारण बुद्धि से अपने स्वामी के लिए 22 युद्धों में विजय पायी। उसी की बदौलत आदिलशाह अफगान सल्तनत का मालिक

बना रहा। युद्ध के मैदान में या परामर्श की सभा में भी आगे–आगे रहता। मुन्तखबुत्तवारीख में है कि 962 हि० अर्थात 1564 ई० में आदिलशाह की सल्तनत में बहुत बड़ा अकाल पड़ा। लोग एक रोटी पर जान देते। लेकिन उसकी सेना में 500 हाथियों को प्रतिदिन चीनी और घी का सालन मिला करता था। वह सभी अफगान सरदारों को अपने यहाँ बुलाकर एक साथ खाना खिलाया करता था। खिलाते समय कहताः बड़े–बड़े नये लुक्मे उठाओ। यदि किसी को कम खाते देखता तो उसको गालियाँ देकर कहताः तू आज सुस्ती से खा रहा है, कल अपने मुगल दामादों से किस तरह लड़ेगा। अफगान यह गालियाँ बर्दाश्त करते थे। हेमू धीरे–धीरे इतना ताकतवर हो गया था कि ऐसा लगता था कि अब दिल्ली और आगरा पर उसी की सत्ता स्थापित हो जाएगी। अकबर के उत्तराधिकार के बाद पहले उसने तुगलकाबाद के पास मुगलों से टक्कर ली और दिल्ली पर अधिकार कर लिया, अपने लिए राजा विक्रमादित्य की उपाधि ले ली। फिर 964 हि० अर्थात 1556 ई0 में पानीपत के मैदान में कम उम्र अकबर से लड़ने के लिए उतरा। मुगल दौर के इतिहासकार इसके लिए अच्छे शब्द प्रयोग नहीं करते हैं क्योंकि वह मुगलों का प्रतिद्वन्दी बना रहा। अबुल फजल ने भी इसका उल्लेख अपमानजनक ढंग से किया है लेकिन वह भी स्वीकार करता है कि पानीपत के युद्ध में उसके साथ राजपूत भी थे और अफगान भी। वह बहुत बहादुरी से लड़ा, लड़ते समय उसने अकबर की सेना के बहुत से बहादुर सिपाहियों को मार गिराया लेकिन अन्त में स्वयं भी मारा गया।

अकबरः-

अकबर की उदारताः–

अकबर (1556–1605 ई0) की उदारता के गलत ढंग के कदमों से मुसलमानों के दिलों को जो दुख पहुँचा उसका उल्लेख आगे आएगा। लेकिन उसकी उदारता से उस जमाने में जो एक खुशगवार माहौल पैदा हुआ। हम उसका विवरण पहले प्रस्तुत करते हैंः–

अकबर ने अपनी बादशाहत के जमाने में राजपूतों के दिलों को जीतने के लिए सभी संभव तरीके अपनाए। उनसे शादी–ब्याह करके रिश्तेदारी भी की। उसका विवाह आम्मेर के कुशवाह वंश के राजा बहादुरमल की बेटी अर्थात राजा भगवानदास की बहन से भी हुआ। उसकी कोख से राजकुमार सलीम पैदा हुआ जो आगे चलकर नूरुद्दीन जहाँगीर के नाम से उसका उत्तराधिकारी बना। अकबर ने राजकुमार सलीम का विवाह राजा भगवानदास की बेटी मानबाई से किया। अकबरनामा खण्ड 3, पृ० 145–152 में इस विवाह का पूरा विवरण मौजूद है जिसको जखीरतुल खवानीन (खण्ड 1, पृ० 104–105) और मासरुल उमरा (खण्ड 2, पृ० 130) में दुहराया गया है। राजा भगवानदास जब अपनी बेटी को विदा करने लगा तो उसने अकबर से कहाः

''हमारी बेटी तुम्हारे महलों की चेरी हम नानद गुलाम रहे''

अकबर ने तुरन्त उत्तर दियाः

''तुम्हारी बेटी तुम्हारे महलों की रानी तुम साहब–ए सरदार रहे।''

मौलाना शिब्ली (रह0) ने इस विवाह के समारोह को कविता का रूप दिया है जिसकी अन्तिम तीन पंक्तियाँ ये हैंः

दुल्हन के घर से मंजिल गाह तक इस शान से लाए कि कोसों तक जमीं पर फर्श दीबा–ए–मुशज्जर था।

दुल्हन की पालकी खुद अपने कंधों पर जो लाए थे वह शहंशाह–ए–अकबर और जहाँगीर इब्ने अकबर था।

यही हैं वह शमीम अंगेजियाँ अस्र–ए–मुहब्बत की, कि जिनसे बोस्तान–ए–हिन्द बरसों से मुअत्तर थ।

❖❖❖

महा कुंभ-विपत्ति के समय मुसलमानों का व्यवहार

इं0 जावेद इक़बाल

कुंभ का पर्व हिन्दू धर्म का एक महत्वपूर्ण पर्व है, इस में लाखों लोगों की भीड़ प्रयागराज शहर (इलाहाबाद) में गंगा जमुना नदी के किनारे स्नान करने के लिए जमा होती है, जो कि एक बड़े मेले का रूप ले लेती है, इसलिए इसे आम जनता कुंभ का मेला कहती है। इस का आयोजन 12 वर्ष के अंतराल पर किया जाता है। हर छठे वर्ष पर अर्द्धकुंभ के नाम से भी इस का आयोजन होता रहता है। यह मेला इलाहाबाद में गंगा जमुना और सरस्वती नदियों के संगम पर लगता है। वही इलाहाबाद जिसे हमारे राजनैतिक फरमांरवा अब प्रयागराज कहते हैं, शायद उन्हें अल्लाह का नाम लेने में संकोच होता होगा। कुंभ मेले में आने वाले श्रद्धालुओं की आस्था है कि संगम पर स्नान करके उन्हें स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है। यह मेला पौष महीने की पूर्णिमा के दिन से आरंभ होता है और मकर संक्रांति के दिन इसकी विशेष मुहूरत होती है। माना जाता है कि इस दिन किसी विशेष समय पर पृथ्वी से ऊपर अन्य लोकों के द्वार खुलते हैं जिस के कारण स्नान करने वाले मनुष्य की आत्मा को उच्च लोकों की प्राप्ति सुविधापूर्वक होती है और मनुष्य पाप मुक्त हो जाता है। हिंदू धर्म का यह एक विशेष पर्व है जो आदि काल से सम्पन्न होता चला आ रहा है। मगर इस वर्ष 2025 में इस पर्व को महाकुंभ का नाम देकर राजनैतिक रंग देने में कोई कसर नहीं छोड़ी गई। दावा किया गया कि इस बार का कुंभ ज्योतिष गणनाओं के आधार पर जिस शुभ समय पर पड़ रहा है वह अवसर एक सौ चवालीस वर्ष बाद आया है, जिस के कारण यह महाकुंभ है। सरकारी तौर पर पूरे देश में इस महाकुंभ में आने के लिए खूब खूब प्रचार किया गया, विज्ञापनों का सहारा लिया गया, गोदी मीडिया ने भी सरकार के प्रति अपना हक पूरी ईमानदारी के साथ अदा किया। सरकारी सतह पर 40 करोड़ की संख्या तक श्रद्धालुओं के आने का दावा किया गया। कुल मिलाकर दुनिया को यह दिखाने का प्रयास किया गया कि प्रयागराज में होने वाला हिंदू धर्म का यह पर्व, दुनिया में आयोजित होने वाला सब से बड़ा और विशाल पर्व है। साथ ही यह भी एहसास कराया गया कि वर्तमान सरकार ही हिंदू धर्म को यह सम्मान दिलाने में सक्षम है। अन्य राजनैतिक पार्टियों ने कभी इस काम में रुचि नहीं दिखाई।

कुंभ के संबंध में जो प्रसार प्रचार और विज्ञापनों का सहारा लिया गया उस से कुछ यह भी महसूस हुआ जैसे मुसलमानों के हज–पर्व की महिमा को देखकर सत्ता पर काबिज राजनैतिक पार्टी हीन भावना से ग्रस्त है। इसीलिए 40 करोड़ गिनती दिखाने के मक़सद से पूरे देश में अवाम को कुंभ में लाने की मुहिम चलाई गई, मगर उन्होंने हज यात्रा को सुनियोजित तरीके से संपन्न कराने के प्रबंधों का गंभीरता पूर्वक अध्ययन नहीं किया। हज यात्रा पर जाने वाले प्रत्येक व्यक्ति का रजिस्ट्रेशन होता है, सफर के दौरान क़दम क़दम पर हाजियों की गिनती होती है। पहचान के लिए हाथों में नाम पते और नंम्बर का कड़ा होता है। रहने के लिए प्रत्येक हाजी के लिए होटल या कैम्प में अलग बिस्तर होता है, जिस से किसी भी अप्रिय घटना के समय या किसी हाजी के भटक जाने पर तुरंत उसकी पहचान हो सके और उसकी सहायता की जासके।

कुंभ की आड़ में राजनीतिक लाभ के साथ साथ धार्मिक भावनाओं को उत्तेजित करके टूटते बिखरते हिंदू समाज को पुनर गठित करना भी एक मक़सद था। मगर करोड़ों की भीड़ को कंट्रोल करने के लिए जिस तरह की व्यवस्था की

ज़रूरत थी वह सच्ची भक्ति भावना के अभाव के कारण और वी० आई०पी० कलचर का पालन करने के कारण संभव न हो सकी। विभिन्न शंकराचार्यों, अखाड़ों, संतों, सेठों और राजनीतिक दिग्गजों की सुविधा के लिए पीपा पुलों को आम जनता के लिए बंद करना भगदड़ का एक मुख्य कारण बना।

लाखों करोड़ों की अव्यवस्थित भीड़ जो मीलों पैदल चलकर स्नान स्थल पर जल्द से जल्द पहुंचना चाहती थी, उसे घाटों के निकट पहुंच कर आगे जाने से रोका जाना कितना उचित कहा जायेगा। पीछे से आने वाली भीड़, नियंत्रित करने की व्यवस्था के अभाव में आगे बढ़ती रही और फिर मानव शरीर के दबाव में जो लोग संतुलन बनाए न रख सके वे लड़खड़ा कर गिरे। कुछ कुचले और मृत्यु को प्राप्त हुए और जो भाग्यशाली थे वे गम्भीर रूप से घायल हुए। एक विशेष राजनैतिक दल के कुछ नेता इस शोक के अवसर पर भी पीड़ित श्रद्धालुओं के घावों पर नमक छिड़कने से बाज नहीं आए और उन्होंने कह दिया कि अपार भीड़ भाड़ के अवसर पर ऐसी छोटी मोटी घटनाओं का हो जाना सामान्य बात है। एक खुद साखता संत ने तो मरने वालों को मोक्ष को प्राप्त होने की ख़ुशख़बरी सुना डाली।

कुंभ मेले में आने वाले श्रद्धालुओं का कोई रजिस्ट्रेशन और पहचान चिह्न न होने के कारण यह बताना संभव ही नहीं रहा कि कितने मरे और कितने बचे। किसी ने कहा 30 मरे और किसी ने कहा हजार। कांग्रेस अध्यक्ष ने राज्य सभा में बयान देते हुए एक हज़ार के मरने का अंदेशा जाहिर किया है। कुछ लोग यह भी कहते सुने गए कि अनेक शव गंगा में बहा दिए गए, मगर सरकार की ओर से कोई अधिकारिक बयान नहीं आया। एक महिला ने स्वयं अपनी आप बीती सुनाते हुए कहा कि वह गिरी और गिर कर बेहोश हो गई मगर मेरी सुनने की शक्ति अपना काम कर रही थी, किसी ने कहा इसे भी बहादो, दूसरे किसी ने कहा इस के मुंह पर पानी डालो, संभव है कि यह मरी न हो अतः मेरे ऊपर पानी डाला गया जिस के प्रभाव से मैं उठकर बैठ गई और मेरी जान बच गई।

अनेक टेंटों में आग भी लगी, हर बार बीसियों टेंट जले मगर अल्लाह का शुक्र है कोई जान का नुक़सान नहीं हुआ। अग्नि शमन व्यवस्था के चुस्त व दुरुस्त होने का यह प्रमाण है। आग प्रायः कैम्पों में चूल्हा जलाने के कारण ही लगती है। चूल्हा चाहे गैस का हो या स्टोव हो, मेले जैसी जगहों पर सख़्ती से उस पर रोक लगाना चाहिए। साथ ही खाने पीने के होटलों पर उचित दाम हेतु कठोर नियंत्रण रखना चाहिए।

अभी जब यह पंक्तियां लिखी जा रही हैं सूचना प्राप्त हुई कि इलाहाबाद की ओर जाने वाले सभी मार्गों पर नगर से 15–20 किलोमीटर तक भारी जाम लगा हुआ है। लखनऊ की ओर से जाने वाले मार्ग पर तो जाम 30 कि ०मी० तक बताया गया। इतने लम्बे लम्बे जाम में फंसे बच्चे बूढ़े और महिलाएं, सोचिए उनकी क्या दशा होगी। खाना पीना, पेशाब पाख़ाना सभी मानवीय ज़रुरतें कैसे और कब तक रोकी जा सकती हैं? ये सब व्यवस्था की नाकामी का खुला प्रमाण है। दरअसल इतने बड़े मजमे को नियंत्रित रखने के लिए प्रत्येक विभाग के कर्मचारियों को विशेष ट्रेनिंग की जरूरत थी, परंतु वह उन्हें नहीं दी गई। पुलिस कर्मियों को श्रद्धालुओं के साथ नम्रता और सहानुभूति पूर्वक व्यवहार करने की विशेष ट्रेनिंग देने की बेहद ज़रूरत थी मगर इस ओर भी ध्यान नहीं दिया गया। नतीजे में पुलिस कर्मी अपना लाठी डंडों और गाली गलोच का विशेष व्यवहार जिस के लिए वे जाने जाते हैं, करते नज़र आए।

छः और बारह वर्ष के बाद होने वाले इस महत्वपूर्ण पर्व के लिए लगभग एक वर्ष पूर्व से हर प्रकार की व्यवस्था और कर्मचारियों की ट्रेनिंग का इंतजाम गंभीरता पूर्वक होना अति आवश्यक है। और इससे भी

ज़्यादा ज़रूरी है कि धार्मिक पर्व का राजनैतिकरण न किया जाए। स्नान के लिए आने वालों का रजिस्ट्रेशन किया जाए। स्नान के दौरान श्रद्धालुओं के लिए नियमावली बनाई जाए जिसका पालन कराने के लिए उन को भी ट्रेनिंग दी जाए, इतना ही नहीं उनकी तो धार्मिक कृतियों का भली भांति संपादन कर सकने की भी ट्रेनिंग होना चाहिए। उनके ठहरने का उचित प्रबंध किया जाए खाने पीने के लिए सस्ते होटलों, जलपान गृहों की व्यवस्था की जानी चाहिए, आने जाने के लिए अलग–अलग मार्गों का होना बहुत जरूरी है। खाने पीने की सस्ती व्यवस्था तभी सम्भव होगी जब सरकार दुकानों को कमाई का जरिया न बनाए, उनका अलाटमेंट नीलामी द्वारा न करे बल्कि उन्हें सब्सिडी के आधार पर चलवाए। सरकार को चाहिए कि इस पवित्र धार्मिक पर्व का राजनैतिकरण न करे, धार्मिक पर्व कोई भी हो उसे धार्मिक ही रहने दे और श्रद्धालुओं तथा सेवा पर नियुक्त कर्मियों सभी के मन में भक्ति भावना को बढ़ाने के लिए तीर्थ यात्राओं के अवसर पर अधिक से अधिक समय वैदिक मंत्रों के उच्चारण में गुजारने का आह्वान करे। वैसे तो यह काम संतों महंतों, पंडितों और शंकराचार्यों का है, उन्हें केवल अपनी तीर्थ यात्रा को सफल बनाने और केवल अपने स्नान की चिंता न करके आम जनता को भक्ति भावना से ओत–प्रोत करने की कोशिश करना चाहिए, ताकि आम आदमी आडम्बरों के मकड़जाल से निकल कर सत्य धर्म का ज्ञान प्राप्त कर सके।

इस अवसर पर मुसलमानों का रवैय्या कैसा रहा इसकी चर्चा भी ज़रूरी है क्योंकि सब जानते हैं कि पिछले दस वर्षों से मुसलमानों के ख़िलाफ़ नफ़रत फैलाने के मक़सद से कैसी कैसी साजिशें रची जा रही हैं। कभी माब लिंचिंग, कभी बुलडोजर, कभी देशद्रोही क्या क्या नही किया जा रहा है।

मगर मुसलमानों ने क़ुरआन पाक में अल्लाह तआला के फरमान को सदा याद रखा, जिसमें कहा गया है ''मोमिनों तुम किसी क़ौम की दुश्मनी इस कारण न करना कि उसने तुम्हें मस्जिदे हराम में जाने से रोका था और देखो किसी प्रकार का जुल्म व ज़्यादती न करना, बल्कि भलाई और प्रेम व्यवहार का तरीका ही जारी रखना''।

(सूरः अलमाइदा–2)

यही कारण है कि जब इलाहाबाद नगर, देश भर से आए करोड़ों श्रद्धालुओं की भीड़ से उबल रहा था और भगदड़ के नतीजे में लोग इधर उधर भाग रहे थे, हर तरफ चीख़ व पुकार थी, उस बिपता के समय यू0पी0 टूरिज्म प्रमोटर तानिया मित्तल के कथनानुसार भागती भीड़ को देखकर साधू संतों ने अपने आश्रमों के दरवाजे बंद कर लिए थे। ऐसी आपदा के समय वही मुसलमान जिन पर मेला परिसर में प्रवेश प्रतिबंधित कर दिया गया था, काम आए।

मुसलमानों ने अपने घरों, अपनी मस्जिदों और अपनी दरगाहों के दरवाज़े खोल दिए, इतना ही नहीं बल्कि कड़ी ठंड से बचाने के लिए लिहाफ कम्बल और गद्दों का इंतजाम किया तथा खाने पीने के लिए भंडारे खोल दिए। हाफ़िज़ रज्जब मस्जिद के पास एक मुस्लिम परिवार ने चालीस से अधिक परेशान हाल श्रद्धालुओं के लिए अपना पूरा घर खोल दिया और अपने मेहमान की तरह उनके आराम का पूरा बंदोबस्त किया।

कहने वालों ने कहा कि सरकार ने मुसलमानों को मेले से दूर रखा तो मेला ख़ुद मुसलमानों के पास आ गया।

मुसलमानों ने इस अवसर पर जिस नैतिक धर्म को निभाया उसके लिए यदि कोई यथार्थवादी–हक़ीक़त पसंद सरकार होती तो इन हमदर्द मुसलमानों के प्रति आभार व्यक्त करती, उनका सम्मान करती, उनकी प्रशंसा में बयान जारी करती। मगर यहां तो सत्ता पर वे लोग क़ाबिज हैं, जिनके दिल नफ़रत की आग में झुलस कर कोयला हो चुके हैं।

❖❖❖

मुसलमान और सरकारी नौकरी

शमीम इक़बाल खाँ

शिक्षा ही वह वास्तविक धन है जिसका प्रचार प्रसार ही इस्लाम की उचित सेवा है, शिक्षा प्राप्त करना पत्येक मुसलमान का धार्मिक कर्तव्य है इसके बावजूद भारत में मुसलमान शिक्षा में सब से पीछे है। 2011 की जनगणना के अनुसार ईसाइयों में शिक्षा 84.5 प्रतिशत, हिन्दू में 73.3 प्रतिशत और मुसलमानों में 68.5 प्रतिशत थी।

शिक्षा में मुसलमान पीछे हैं लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि शर्मिन्दा होने की ज़रूरत महसूस की जाये मगर इस पर विचार किया जाना जरूरी है कि मुसलमानों में शिक्षा का प्रतिशत कैसे बढ़ाया जाये?

दूसरी ओर सरकारी नौकरियों में मुसलमानों का प्रतिशत बहुत घटा है। सबसे अधिक प्रतिशत बौद्धों का 43.1%, मसीहों का 41.9%, सिखों का 36.3% और मुसलमानों का 32.6% है जिस को बढ़ाया जाना ज़रूरी है अन्यथा यह संख्या वर्ष–प्रति वर्ष घटती ही रहेगी। मुकाबला सख़्त हो गया है और उस मुकाबले का सामना करने वालों में मुस्लिम उम्मीदवार नहीं के बराबर हैं। अब कोई मुकाबला करेगा ही नही तो जीत का कोई सवाल ही नहीं पैदा होता है।

भारतीय सेना में केवल 29000 मुसलमानों की भागेदारी है जो कि सेना का सिर्फ तीन प्रतिशत ही हुआ, इसी प्रकार भारतीय पुलिस में मात्र एक प्रतिशत मुसलमानों की भागेदारी है।

लोग एम.सी.ए. या एम.बी.ए. करने के लिये लम्बी फ़ीस भरते हैं और कड़ी मेहनत भी करते हैं इसके बाद मिलती भी है तो प्राइवेट कंपनी में नौकरी जिसका कोई भविष्य नहीं होता, कभी कर्मी को कंपनी पसन्द नहीं आती और कभी कंपनी को कर्मी पसन्द नहीं आता।

अगर आप शानदार मुलाज़मत चाहते हैं तो एम.सी.सी. अथवा एम.बी.ए. आदि न करके इनकी फ़ीस बचाकर अपने वाल्दैन को कर्ज़ के बोझ से बचायें और ग्रेजुऐशन के बाद यू.पी.एस.सी. की तैयारी करें, इसके लिये कोचिंग सेन्टर अब लखनऊ में भी उपलब्ध हैं।

UPSC 2024 में पास होने वाले कुल अभ्यर्थी 1016 थे इन में 50 अभ्यर्थी मुसलमान थे। 2023 में भी पास होने वाले इतने ही मुसलमान अभ्यर्थी थे, अगर अन्य अभ्यर्थी पास हो सकते हैं तो आप क्यों नही पास हो सकते हैं? मेंहनत करें, मेहनत कभी बेकार नहीं जाती, मुसलमान अभ्यर्थियों के लिये मुफ़्त कोचिंग–सेन्टर भी हैं. उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी, गोमती नगर में भी इस प्रकार की सेवा उपलब्ध है, ज़कात फ़ाउन्डेशन वालों ने भी विकास नगर लखनऊ में मुसलमान अभ्यर्थियों के लिये कोचिंग–सेन्टर खोल रखा है।

अगर आप इतनी मेहनत नहीं कर सकते हैं तो ग्रेजुऐशन के बाद 'ओ–लेवेल' और 'शार्ट–हैन्ड' सीख कर और महारत हासिल करके किसी भी सरकारी नौकरी में जा सकते हैं, अगर आप इन्टर के बाद ही कोई नौकरी चाहते हैं तो निम्न बीस प्रकार के कोर्सेज़ हैं जिनको पास करके आप प्रतिष्ठा और अच्छे वेतन वाली नौकरी प्राप्त कर सकते हैं।

1. चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट (Chartered Accountant)
2. नेशनल डिफेंस अकादमी और नेवल एकादमी (National Defense Academy and Naval Academy)
3. स्पेस टेक्नालॉजी (Space Technology)
4. पुलिस सेवायें (Police Services)
5. फाइन आर्ट्स (Fine Arts)
6. फ़ार्मेसी कोर्सेज (Pharmacy Courses)
7. पोषण विशेषज्ञ और डायटेटिक्स (Nutritionist & Dietetics)
8. एयरलाइन केबिन क्रू (Airline Cabin Crew)
9. पाक कला (Culinary Arts)
10. फ़ोरेंसिक विज्ञान (Forensic Sciences)
11. धातुकारी (Metallurgy)
12. बैंकिंग, फ़ाइनेन्स और इंश्योरेंस (Banking, Finance & Insurance)
13. रेडियो जाकी (Radio Jockey)
14. चिकित्सा निदान (Medical Diagnostics)
15. क्लासिक्स (Classics)
16. आइ.टी.आई.कोर्सेज़ (ITI Courses)
17. फैशन टेक्नालोजी (Fashon Technology)
18. फ़िटनेस प्रशिक्षक (Fitness Instructor)
19. विमानन यानी हवाबाजी (Aviation)
20. बार टेंडऱ (Bartender): मुसलमानों के लिये यह कोर्स नाजायज़ है।

यह संभव है कि उक्त में से बहुत से पाठ्यक्रम जिनमें आप की रुचि हो परन्तु आप के क्षेत्र में उपलब्ध न हो तो मायूस होने की आवश्यकता नहीं है इनको दूरस्थ शिक्षा (Distance Education) या 'आन लाइन' प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि यह कोर्सेज़ कैरियर ओरियन्टेड हैं।

❖❖❖

ईद के दिन की 13 सुन्नतें

1. सुबह सवेरे उठना।
2. गुस्ल करना।
3. मिस्वाक करना।
4. खुशबू लगाना।
5. शरीयत के मुताबिक अपने को बनाना संवारना।
6. उम्दा क़िस्म के साफ़ सुथरे जो मुयस्सर हों कपड़े पहनना।
7. ईदगाह जाने से पहले कोई मीठी चीज़ छोहारे वगैरा खाना।
8. ईदगाह जाने से पहले सदक़–ए–फित्र अदा करना।
9. ईद की नमाज़ ईदगाह में जा कर पढ़ना।
10. ईदगाह बहुत सवेरे जाना।
11. ईदगाह एक रास्ते से जाना और दूसरे रास्ते से वापस आना।
12. पैदल जाना।
13. नमाज़े ईद को जाते वक़्त धीमी आवाज़ से तकबीर पढ़ते हुए जाना– ''अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, लाइलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द''।

रोज़ा और स्वास्थ्य

नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

इस्लाम के पांच महत्वपूर्ण स्तंभों में रोजा (उपवास) का बड़ा महत्त्व है। यह एक प्रमुख धार्मिक कर्तव्य है जिसे मुसलमानों पर रमजान के महीने में निभाने का आदेश दिया गया है। रोजा का उद्देश्य न केवल शारीरिक भूख और प्यास को सहन करना है बल्कि आत्मा की शुद्धि, आत्मनियंत्रण और अल्लाह के प्रति आस्था को और अधिक बढ़ाना भी है।

रोजे के दौरान मुसलमान सूर्योदय अर्थात सुबहे सादिक से लेकर सूर्यास्त तक खाना और पीना छोड़ते हैं। साथ ही बुरी आदतों से बचने का प्रयास करते हैं। यह समय और महीना आत्म–नियंत्रण, इबादत और आत्मंथन का होता है। रोजे से व्यक्ति में धैर्य, सहनशीलता और दूसरों के प्रति सहानुभूति बढ़ती है।

रमजान के महीने में रोजा रखने से न केवल व्यक्ति की धार्मिक भावना प्रबल होती है बल्कि वह गरीबों और जरूरतमंदों के लिए एक सामाजिक संदेश भी देता है कि हम अपने आराम और समृद्धि का कुछ हिस्सा दूसरों के साथ साझा करें। इस्लाम में रोजा रखने से व्यक्ति को सवाब और अल्लाह की विशेष कृपा मिलती है और यह विश्वास है कि रमजान के महीने में किए गए अच्छे कार्यों का विशेष इनाम भी मिलता है।

इसी प्रकार रमजान में तीस दिन के रोजे इंसान को जिस्मानी व रूहानी तौर पर मजबूत बनाते हैं। रोजा जिस्म की अंदरूनी बीमारियों का खात्मा करने का बेहतरीन माध्यम है। बूढ़े–पुरनियाँ और खान–पान पर पैनी नज़र रखने वालों द्वारा माना जाता है कि पहले दो रोजे से ब्लड शुगर लेवल गिरता है अर्थात खून से शूगर के गंभीर खतरे कम हो जाते हैं। इसी तरह तेज धड़कने वाली दिल की धड़कन सुस्त हो जाती है और खून का दबाव कम हो जाता है। नसों में जमा ग्लुकोज आजाद हो जाते हैं जिसके कारण शरीर में कमजोरी का एहसास होने लगता है लेकिन ज़हरीले तत्वों की सफाई के पहले स्टेज के नतीजे में सरदर्द, सर का चकराना और मुंह की बदबू खत्म होने लगती है।

इसी प्रकार तीसरे से सातवें रोजे तक जिस्म की चर्बी टूट–फूट का शिकार होती है और पहले स्टेज में ग्लूकोज में परिवर्तित हो जाती है। कुछ लोगों की तो त्वचा मुलायम और चिकनी हो जाती है जिससे शरीर भूख का आदी होना शुरू हो जाता है और इस तरह साल भर बिजी रहने वाला पाचन सिस्टम ठीक रहने लगता है हो सकता है कि रोजेदार के फेफड़ों में मामूली तकलीफ़ का एहसास हो इसलिए कि ज़हरीले माद्दों (पदार्थो) की सफाई का काम शुरू हो चुका होता है और आंतों की मरम्मत का काम भी शुरू हो चुका होता है। इसी प्रकार आंतों की दीवारों पर जमा मवाद भी ढीला होना शुरू हो जाता है।

आठवें से पंद्रहवें रोज़े तक रोजेदार पहले से ज़्यादा चुस्त महसूस करता है। जिस्म अपने मुर्दा सेल्स को खाना शुरू कर देता है जिनको आमतौर से केमोथेरेपी से मारने की कोशिश की जाती है। इसी वजह से सेल्स में पुरानी बीमारियों और दर्द का एहसास बढ़ जाता है। नाड़ियों और टांगों में तनाव इसी अमल का नतीजा होता है। जो इम्युनिटी के जारी अमल की निशानी है। इसमें रोजाना नमक के गरारे नसों की अकड़न का बेहतरीन इलाज है।

अब सोलहवें से तीसवें रोजे तक इंसानी जिस्म पूरी तरह भूख और प्यास को बर्दाश्त

का आदी हो चुका होता है। वह अपने आप को चुस्त, चाक व चौबन्द महसूस करने लगता है। उन दिनों उसकी जबान बिल्कुल साफ–सुथरी हो जाती है। साँस में भी ताजगी आ जाती है। जिस्म के सारे जहरीले तत्वों का खात्मा हो चुका होता है। पाचन सिस्टम की मरम्मत हो चुकी होती है। शरीर से बेकार चर्बी और बेकार तत्व निकल चुके होते हैं। बदन अपनी पूरी ताक़त के साथ अपने कर्तव्यों को निभाना शुरू कर देता है।

बीस रोजों के बाद याददाश्त तेज हो जाती है। तवज्जो और सोच को केंद्रीकृत करने की क्षमता बढ़ जाती है और इस प्रकार बदन और रूह तीसरे अशरे में हर कर्तव्यों को अदा करने हेतु सक्षम हो जाते हैं। हमेशा की तरह रमजान में भी पांचों वक्त नियमित नमाजें अदा करने से शारीरिक व मानसिक शक्ति में वृद्धि होती है तथा इंद्रियों पर वश पाने की क्षमता में बढ़ोतरी हो जाती है। रोजा बुराइयों को कोसों दूर भगाने में मदद करती है जिससे शरीर में पलने वाले परजीवी का खात्मा होता है।

कुल मिला कर रोजा का सेहत पर अनेक सकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं जैसे वजन कम करने में रोजा मदद करता है क्योंकि एक निर्धारित समय तक मुसलमानों को भोजन और पानी से परहेज करना होता है, जो वजन कम करने में सहयोगी बनता है। इसी प्रकार मधुमेह जिसका ऊपर जिक्र आया, को नियंत्रित करने में रोजा मदद करता है। हार्ट के मरीजों, पेट के मरीजों और टेंशन से ग्रस्त लोगों की बीमारी को नियंत्रित करने में रोजा भरपूर मदद करता है।

रोजा रखने के दौरान स्वास्थ्य हेतु कुछ का ध्यान देने वाली बातें हैं कि रोजेदार को पर्याप्त पानी पीना चाहिए ताकि वह डिहाइड्रेशन से बच सकें। रोजा रखने के दौरान रोजेदार को स्वस्थ भोजन करना चाहिए ताकि वे अपने शरीर को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान कर सकें। इसी प्रकार उन्हें हल्का व्यायाम भी करना चाहिए ताकि वे अपने शरीर को सक्रिय रख सकें।

❖❖❖

दुआ-ए-मग़फिरत की दरख़्वास्त

बुधवार, 22 जनवरी 2025 को प्रसिद्ध शायर व साहित्यकार और इस्लामिक लिट्रेचर एसोसिएशन के सदस्य डा0 ताबिश मेहदी का निधन हो गया। ''इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन''। मरहूम जमात-ए-इस्लामी के सदस्य भी थे, जिनका अहले नदवा और विशेषकर हसनी परिवार से गहरा संबंध था, उनका जन्म 3 जुलाई, 1951 को प्रतापगढ़ में हुआ था। प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा के बाद, उन्होंने 1989 में आगरा विश्वविद्यालय से एम0ए0 (उर्दू) और 1997 में जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली से उर्दू आलोचना में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की।

परिवारजनों में उनकी बेवा के अलावा दो बच्चे, शाह दानिश फ़ारूक़ फ़लाही और शाह अजमल फ़ारूक़ नदवी और चार बेटियाँ हैं। अल्लाह मरहूम की मग़फ़िरत फरमाए, और जन्नतुल-फ़िरदौस में उच्च स्थान प्रदान करे। आमीन।

हम अपने समस्त पाठकों से दुआ-ए-मग़फ़िरत की दरख़्वास्त करते हैं।

❖❖❖

शोब-ए-दअवतो इरशाद नदवतुल उलमा के मुबल्लिग़ मौलाना आफ़ताब आलम नदवी ख़ैराबादी के चचा जनाब नफ़ीस अहमद ख़ान साहब का दिनांक 6 फरवरी, 2025 को ब्रेन हैमरेज से इंतेक़ाल हो गया। ''इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन''।

मरहूम बड़ी नेक तबीयत के मालिक और नमाज़ रोजे के पाबंद थे। हम अपने समस्त पाठकों से मरहूम के लिए दुआ-ए-मग़फ़िरत की दरखास्त करते हैं। (इदारा) ◆◆

तरावीह की नमाज़ और ऐतिकाफ़

(इदारा)

रमज़ान में तरावीह की नमाज़ का बड़ा महत्व है, अल्लाह के प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वयं अपने सहाबा को तरावीह की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ाई परन्तु आप ने यह नमाज़ केवल रमज़ान की तीन रातों में पढ़ाई, पहली रात में इशा की नमाज़ के बाद आप ने तरावीह की नमाज़ पढ़ाई, दिन में, सहाबा में इस नमाज़ की चर्चा हुई तो दूसरी रात इस नमाज़ में सहाबा की भारी तादाद थी, दिन में फिर इस नमाज़ की चर्चा हुई तो रात में जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तरावीह की नमाज़ पढ़ाई तो नमाज़ियों की इतनी तादाद हो गई कि मस्जिद में जगह न रही। चौथी रात इशा की नमाज़ के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने हुजरे में चले गए, सहाबा इन्तिजार में बैठे रहे कि आप आएंगे और तरावीह की नमाज़ पढ़ाएंगे लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हुजरे से बाहर न आये। सुब्ह की नमाज़ के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा से फरमाया कि मैं तुम्हारा ज़ौक़ व शौक देख रहा था, मुझे डर हुआ कि कहीं यह नमाज़ तुम पर फर्ज़ न कर दी जाए और उसकी अदायगी में तुम से कोताही हो इस लिए मैं हुजरे से नहीं निकला, उसके बाद से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के काल में और हज़रत अबू बक्र रज़ि0 के काल में यह नमाज़ जमाअ़त से नहीं पढ़ी गई लेकिन सहाबा रज़ि0 अपने तौर पर अलग अलग यह नमाज़ पढ़ते रहे सहाबा में इस बात में मतभेद हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तरावीह की नमाज़ में कितनी रकअ़तें पढ़ाई थीं। सब अपने अपने मत के अनुकूल यह नमाज़ पढ़ते रहे यहां तक कि दूसरे खलीफा हज़रत उमर रज़ि0 का ज़माना आ गया।

हज़रत उमर रज़ि0 ने सहाबा के मशवरे से यह फैसला लिया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तरावीह की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ना पसन्द था अतएव तीन दिनों तक इसे जमाअत से पढ़ाया भी था लेकिन सहाबा के शौक को देख कर इस लिए रोक दिया था कि कहीं वह उन पर फर्ज़ न कर दी जाए और वह उस की अदाएगी में दुशवारी महसूस करें यही खतरा हज़रत अबू बक्र रज़ि0 के सामने रहा और उन्होंने अपनी खिलाफत के ज़माने में तरावीह की नमाज़ लोगों को अलग अलग पढ़ने दिया और जमाअ़त से न पढ़वाया, अब चूंकि इस का डर नहीं है इस लिए यह नमाज़ जमाअ़त से पढ़ी जाए और आपने मस्जिदे नबवी में तरावीह की नमाज़ के इमाम की तअ़यीन (नियुक्ति) भी कर दी और तरावीह की रकअतों के मत भेद को दूर करते हुए बीस रकअ़तें पढ़ने का आदेश दिया।

इस विषय में मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी अपनी पुस्तक ''इस्लामी फिक़्ह'' भाग–1 के पेज नं0 399.–400 पर लिखते हैं:–

हज़रत उमर रज़ि0 ने अपने ज़माने में मस्जिदे नबवी में बीस रकअ़त बाजमाअ़त तरावीह पढ़ने का और पढ़ाने का एहतिमाम किया और आम सहाबा रज़ि0 उस में शरीक हुए और किसी ने हज़रत उमर रज़ि0 की राय से इख़्तिलाफ़ नहीं किया, इस बिना पर अइम–ए–सलासा यानी इमाम अबू हनीफा रह0, इमाम शाफई रह0 और इमामे अहमद बिन

हंबल रह0 और दाऊद जाहिरी रह0 बीस रकअ़त के काइल हैं और उसी को जम्हूरे उम्मत ने इख़्तियार किया है,

तरावीह की नमाज़ का हुक्मः—

तमाम बालिग मर्दों और औरतों के लिए नमाज़े तरावीह़ का पढ़ना सुन्नते मुअक्किदा है, अलबत्ता औरतों को तरावीह़ घर में पढ़ना चाहिए और मर्दों को मस्जिद में जमाअ़त के साथ, अगर किसी महल्ला या गांव की मस्जिद में तरावीह की नमाज़ जमाअ़त से न पढ़ी जाए तो उस गांव या महल्ले के लोग सुन्नत छोड़ने के गुनाह में मुबतला होंगे और काबिले मलामत होंगे।

रमज़ान के महीने में यूं भी जिस वक्त कोई नफ़्ल नमाज़ पढ़ें उस का सवाब दूसरे महीनों के फर्ज़ के बराबर मिलता है लेकिन नमाज़े तरावीह़ जिस की बहुत ताकीद आई है उस का एहतिमाम बहुत ज़्यादा करना चाहिए।

तरावीह में खत्म कुर्आनः—

रमज़ान शरीफ में कुर्आन के दौर की बड़ी अहम्मीयत है अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रमज़ान में हज़रत जिब्रील को कुरआन सुनाते थे और अपने आखिरी रमज़ान में तो दो दौर सुनाए थे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीसरी रात जो तरावीह पढ़ाई थी वह इतनी लम्बी थी कि सहाबा को खयाल होने लगा था कि ऐसा न हो कि सहरी का वक्त न मिले इन सब बातों को सामने रखते हुए उलमा ने तरावीह की नमाज़ में एक कुरआन ख़त्म करने को सुन्नत लिखा है लिहाज़ा इस का एहतिमाम करना चाहिए लेकिन अगर कुरआन सुनाने वाला हाफिज़ न मिल सके तो कुर्आन की कुछ सूरतों से बीस रकअ़ात जमाअ़त से पढ़ लेना चाहिए।

हाफिज को तरावीह़ की नमाज़ में कुरआन शरीफ इतना तेज न पढ़ना चाहिए की अल्फ़ाज़ समझ में न आएं, रही बात तरावीह़ की नमाज़ में कम ज़्यादा पढ़ने की इस को नमाज़ियों के मुतालबे और हाल पर छोड़ देना चाहिए।

तरावीह की नमाज़ की उजरत तै कर के कुरआन सुनाना दुरुस्त नहीं है। अलबत्ता अगर कोई अपनी तरफ से खुफिया तौर पर हाफिज साहब को हदीया पेश करे तो हाफिज़ साहब के लिए उसके क़बूल करने में हरज मालूम नहीं होता।

रमज़ान में तरावीह़ की नमाज़ के बाद वित्र की तीन रकअ़ात जमाअत से पढ़ी जाती हैं इस की तीनों रकअ़तों में किराअत जेहरी होती हैं और तीसरी रकअत में दुआए कुनूत आहिस्ता पढ़ी जाती है।

ऐतिकाफ़ः—

एतिकाफ़ अरबी शब्द है इस का अर्थ ठहरना और किसी जगह बन्द होना है परन्तु शरीअ़त में रमज़ान के आखिरी दस दिनों में या दूसरे दिनों में दुन्या के कारोबार और बीवी बच्चों से अलग हो कर मस्जिद में और औरतों के लिए घर में किसी एक जगह इबादत के लिए ठहरने को ऐतिकाफ़ कहते हैं ऐतिकाफ़ करने वाले को मोतकिफ और जिस जगह ऐतिकाफ़ करते हैं उसको मोतकफ कहते हैं।

रमज़ान के आखिर के दस दिनों में मस्जिद में ऐतिकाफ़ करना सुन्नते मुअक्कदा अलल —किफाया है अर्थात मस्जिद में अगर एक शख़्स भी ऐतिकाफ़ कर लेगा तो उस मस्जिद के महल्ले या मस्जिद के गांव के सभी मुसलमानों की तरफ से ऐतिकाफ़ की सुन्नत अदा हो जाएगी लेकिन अगर मस्जिद में कोई भी ऐतिकाफ़ न करे तो मस्जिद के महल्ले के या मस्जिद के गांव के तमाम मुसलमानों पर ऐतिकाफ़ की सुन्नत छोड़ने का गुनाह होगा।

बीस रमज़ान को अस्र की नमाज़ के बाद ऐतिकाफ़ के लिए ऐतिकाफ़ की नीयत से मस्जिद में बैठ जाना चाहिए अगर कोई ज़रूरत हो और अस्र बाद न बैठ सकें तो सूरज डूबने से पहले पहले ऐतिकाफ़ की नीयत से मस्जिद में दाखिल हो जाएं और कोई जगह खास कर लें और उस जगह पर अपना बिस्तर बिछा लें और चाहें तो उस जगह को पर्दे से घेर लें मगर इस तहर कि जमाअ़त के वक्त पर्दा उठाया जा सके और बिस्तर लपेटा जा सके ताकि जमाअ़त में कोई खलल न पड़े। यह ऐतिकाफ़ ईद का चांद देखने तक जारी रहेगा, जब ईद का चांद दिख जाए तब मोतकिफ अपने मोतकफ से बाहर आएगा। मर्द सिर्फ मस्जिद ही में ऐतिकाफ़ कर सकते हैं।

औरतों का मोतकफ़:—

औरतों के लिए मस्जिद में ऐतिकाफ़ करना मकरूहे तहरीमी है औरतें अपने घर में जिस जगह नमाज़ पढ़ती हैं उस जगह को अपना मोतकफ बना लें। अगर नमाज़ के लिए कोई खास जगह न हो तो घर में कोई मुनासिब जगह मुकर्रर कर के पर्दे से घेर लें और उसी में ऐतिकाफ़ करें।

सुन्नत ऐतिकाफ़ के लिए ज़रूरी बातें:—

(1) मर्दों के लिए मस्जिद में और औरतों के लिए अपने घर में मोतकफ में बीस रमज़ान की शाम को सूरज डूबने के पहले से ले कर ईद का चाँद दिखने तक ठहरना और शरई इजाज़त के बगैर दरमियान में मोतकफ से बाहर न आना।

(2) ऐतिकाफ़ की नीयत करना ज़रूरी है, बगैर नीयत के कोई शख़्स रमज़ान के आखिरी अशरे में मस्जिद में ठहरा रहे या औरतें अपने मोतकफ में बगैर नीयत के ठहरी रहें तो ऐतिकाफ न होगा।

(3) मोतकिफ़ को हदसे अक्बर से पाक होना ज़रूरी है यानी उसको जनाबत वगैरा के गुस्ल से पाक होना ज़रूरी है। इसी तरह औरत को हैज (माहवारी) और निफ़ास (प्रसव रक्त) से पाक होना ज़रूरी है।

जो बातें ऐतिकाफ़ में हराम हैं:—

(1) बे ज़रूरत मोतकफ से बाहर निकलना हराम है, याद रहे मस्जिद का वह पूरा हिस्सा जिस में नमाज़ पढ़ी जाती है मोतकफ है। और औरतों का मोतकफ वह है जो उन्होंने अपने घर में ऐतिकाफ़ के लिए खास कर लिया।

खाने, पीने पाखाना पेशाब और फर्ज गुस्ल करने के लिए मोतकफ से बाहर निकलना दुरुस्त है।

अगर जिस मस्जिद में ऐतिकाफ़ किया है उस में जुमे की नमाज़ नहीं होती है तो जुमे की नमाज़ अदा करने के लिए जामे मस्जिद जाने की इज़ाज़त है मगर जुमे की नमाज़ ख़त्म होते ही अपने मोतकफ में वापस आना ज़रूरी है अलबत्ता सुन्नतें भी वहां पढ़ सकते हैं। जुमे की नमाज़ से पहले की सुन्नतें मोतकफ में पढ़ कर जाना चाहिए।

कुछ और ज़रूरी बातें:—

अगर कोई खाना पहुंचाने वाला हो तो खाना खाने के लिए मोतकफ न छोड़ें, मस्जिद में अगर बैतुलखला और गुस्ल खाना हो तो पाखाने पेशाब और फ़र्ज गुस्ल के लिए उसी में जाएं, लेकिन अगर कोई दुश्वारी हो तो इन कामों के लिए अपने घर भी जा सकते हैं, जिस काम के लिए भी मोतकफ से बाहर निकलें वह काम हो जाते ही मोतकफ में वापस आएं किसी से बातें करने के लिए रुकें नहीं।

(2) ऐतिकाफ की हालत में मुबाशरत (संभोग) हराम है मोतकफ में या मोतकफ के बाहर इससे एतिकाफ टूट जाएगा।

मोतकफ में दुन्यावी काम करना मकरूह है।

मोतकिफ को अपने मोतकफ में इबादत के बजाए चुप चाप बैठे रहना मकरूह है उसको चाहिए कि फर्ज नमाज़ों के अलावा नफ़्ल नमाज़ों में या कुर्आन की तिलावत में या जिक्र में या दुरूद पढ़ने में या दीनी मजमून या किताब लिखने में मशगूल रहे, मोतकफ में सोना जाइज़ है।

ऐतिकाफ़ की कज़ाः—

अगर रमज़ान के आखरी अशरे का ऐतिकाफ टूट जाए तो जिस दिन का ऐतिकाफ टूटे रमज़ान के बाद उसकी क़ज़ा करे यानी जिस दिन कज़ा करना हो उससे एक दिन पहले की शाम को सूरज डूबने से पहले ऐतिकाफ की नीयत से मस्जिद में दाखिल हो और मगरिब बाद रोज़े की भी नीयत करे इस तरह पूरी रात और पूरे दिन ऐतिकाफ में गुजारे और मगरिब पढ़ कर बाहर निकले इसी तरह अगर एक से ज़्यादा दिनों का ऐतिकाफ़ टूटा हो तो उन की कज़ा करे, याद रहे सुन्नत ऐतिकाफ़ की क़ज़ा रोजे के बगैर दुरुस्त नहीं इसलिए जिस दिन रोज़ा हराम है उस दिन सुन्नत एतिकाफ की क़ज़ा दुरुस्त नहीं, यह भी खूब याद रहे सुन्नत ऐतिकाफ़ का अगर रोज़ा टूट गया तो ऐतिकाफ़ भी टूट गया उसकी क़ज़ा लाजिम है। ◆◆

ख़ुश ख़बरी

मौलाना सैयद अम्मार अब्दुल अली हसनी नदवी नदवतुल उलमा के नए नाजिरे आम नियुक्ति।

मौलाना बड़ी विशेषताओं और ख़ूबियों के मालिक हैं इन्शाअल्लाह उनके द्वारा नदवतुल उलमा को बड़ा फ़ायदा पहुँचेगा।

हम दिल की गहराइयों से मुबारक बाद पेश करते हैं।

(इदारा)

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हों, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी

प्रश्न: क्या शुरु रमज़ान में पूरे रमज़ान के रोज़ों की नीयत की जा सकती है?

उत्तर: नहीं हर रोज़े की नीयत हर शाम को या रात में किसी वक़्त या सुब्ह को या दिन में दस ग्यारह बजे तक अलग— अलग करना ज़रूरी है सेहरी भी रोज़े की नीयत में शुमार है।

प्रश्न: ज़कात का इस्लाम में क्या दर्जा है?

उत्तर: ज़कात इस्लाम का तीसरा रुक्न (स्तम्भ) है, कुर्आन पाक में 82 जगहों पर ज़कात अदा करने का हुक्म दिया गया है, और ज़कात न अदा करने वालों और दौलत जमा करके रखने वालों पर सख़्त वईदें (चेतावनियाँ) आई हैं और अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फरमाया कि जो शख़्स नमाज़ क़ाइम करे मगर ज़कात न दे वह पक्का मुसलमान नहीं है।

ज़कात का अर्थ है पाक होना चूंकि ज़कात निकालने से माल पाक हो जाता है और ज़कात निकालने वाले का दिल भी पाक हो जाता है इसलिए इस फरीजे को ज़कात कहा जाता है। शरीअत की परिभाषा में साहिबे निसाब होने पर विशेष मात्रा में माल माजूरों (विवश) को देने का नाम ज़कात है।

प्रश्न: ज़कात के हक़दार कौन लोग हैं?

उत्तर: ज़कात को कुर्आन के आदेशानुसार आठ प्रकार के लोगों पर ख़र्च किया जा सकता हैः—

1. **फुक़राः**— जिनके पास कुछ न हो।
2. **मसाकीनः**— जिनके पास ज़रूरत भर भी न हो।
3. **आमिलीनः**— जो हुकूमत की तरफ़ से ज़कात वसूलते हैं।
4. **मुवल्लिफतुलकुलूबः**— इस्लाम लाने वाले लोग जिनकी दिल जमई की ज़रूरत हो।
5. गुलाम आजाद कराने में।
6. **गारिमीनः**— जो किसी का कर्ज अपने जिम्मे ले ले। या खुद किसी आफत का शिकार हो जाये।
7. **फी सबीलिल्लाहः**— जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद वगैरह में मशगूल हो।
8. **इब्नुस्सबीलः**— मुसाफिर जो हालते सफ़र में परेशान हो चाहे घर का मालदार हो।

(सूरः तौबा)

प्रश्न: किन लोगों को ज़कात देना जाएज़ नहीं है?

उत्तर: वह लोग जिनको ज़कात देना जाएज नहीं:—

1. सय्यद और बनू हाशिम।
2. मालदार जो साहिबे निसाब हो।
3. अपनी औलाद यानी बेटा, पोता, पोती और नवासी वगैरह को।
4. अपने उसूल (मूल) यानी बाप, दादा और नानी वगैरह को।
5. शौहर अपनी बीवी को और बीवी अपने शौहर को।
6. काफिर और मुशरिक को।
7. मालदार की नाबालिग़ औलाद को।

प्रश्न: ज़कात का निसाब क्या है?

उत्तर: ज़कात का निसाबः—

सोनाः— 20 दीनार यानी साढ़े सात तोला (87—479 ग्राम) में ज़कात वाजिब हो जाती है।

चाँदीः 200 दिरहम यानी साढ़े 52 तोला (612.35 ग्राम) में ज़कात वाजिब हो जाती है।

नोटः— अगर किसी के पास साढ़े बावन तोला चाँदी या साढ़े सात तोला सोना या उनमें से किसी के बकद्र रूपया हो और

उस पर साल गुजर जाये तो उस पर उसका चालीसवां हिस्सा बतौर ज़कात फर्ज है।

प्रश्न: सदक़—ए—फित्र का क्या हुक्म है?

उत्तर: सदक़—ए—फित्र का शरई हुक्म यह है कि रमजान का महीना पूरा होने के बाद हर मालदार साहिबे निसाब ईद की नमाज से पहले अपनी और अपनी नाबालिग औलाद की तरफ़ से सदक़—ए—फित्र अदा करे, इसकी तफसील यह है कि जिसके पास बुन्यादी ज़रूरियात, रिहाइशी मकान, खाने पीने का सामान, इस्तेमाली कपड़े के अलावा, किराये के मकानात, जमीन, रखे हुए कपड़े फाजिल गल्ला, सोना चाँदी या कैश रकम इतनी मिकदार में हो कि उनकी कीमत साढ़े बावन तोला चाँदी को पहुंच जाये उस पर सद्का फित्र वाजिब है।

सदक़—ए—फित्र अगर गेहूँ की शक्ल में दिया जाये तो आधा सा दिया जायेगा, गेहूँ के अलावा दूसरी चीजें एक सा दी जायेंगी, हिन्दोस्तानी वजन के लिहाज से आधा साअ 1.666 किलो ग्राम और एक साअ 3.332 किलो ग्राम है, गोया कि हर आदमी के सदक़—ए—फित्र की मात्रा गेहूँ के लिए 1.666 किलो ग्राम और दूसरी चीजों के लिए 3.332 किलो ग्राम है। ईद के दिन सूरज निकलने के बाद सदक—ए—फित्र वाजिब होता है अलबत्ता नमाजे ईद से पहले पहले अदा करना अफ़जल है।

मसअला:— सदक़—ए—फित्र पेशगी भी अदा करना जाएज है। सदक़—ए—फित्र के खर्च करने की वही जगह है जो ज़कात की है।

❖❖❖

पृष्ठ ..15...का शेष

रख कर हलाल चीज़ों के खाने से परहेज़ तो कर लिया, लेकिन रमज़ान में मुर्दा भाई का गोश्त खा रहे हो, इसलिए कि ग़ीबत करने को कुरआन करीम ने मुर्दा भाई के गोश्त खाने के बराबर करार दिया है, इसलिए ग़ीबत से बचने का एहतिमाम करें, फुजूल कामों और बातों से परहेज़ करें, इस तरह यह रमज़ान का पूरा महीना गुजारा जाए।

दुआ की कसरत करें:—

इसके अलावा इस महीने में अल्लाह के हुजूर दुआ की खूब कसरत करें, रहमत के दरवाज़े खुले हुए हैं, रहमत की घटाऐं झूम—झूम कर बरस रही हैं, मग़फिरत के बहाने ढूँढे जा रहे हैं, अल्लाह की तरफ से आवाज़ दी जा रही है कि कोई मुझसे दुआ मांगने वाला है जिसकी दुआ मैं कुबूल करूँ, इसलिए सुब्ह से शाम तक जिस वक़्त चाहो मांगो, इफ़तार के वक़्त मांगो, रोज़े में मांगो, तहज्जुद में मांगो, अल्लाह का ऐलान है कि हर समय मांग सकते हो दुआ की कुबूलियत के दरवाज़े खुले हैं, इसलिए जितना हो सके अल्लाह से खूब दुआएं करने का एहतिमाम करें, अल्लाह तआला हम सबको अपनी रहमत से इन बातों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फरमाए और रमज़ान की क़द्र करने की तौफ़ीक़ अता फरमाए।

आमीन!

❖❖❖

प्रिय पाठको! सलाम मसनून

आपका प्यारा "सच्चा राही" आप की सेवा में बराबर भेजा जा रहा है, परन्तु बड़े खेद की बात यह है कि हमारे बहुत से पाठकों का वार्षिक चन्दा बाकी है, उनको बार-बार लिखा जा रहा है। कृप्या अपना चन्दा तुरन्त भेजें या न भेजने का कारण लिखें। हम आपके आभारी होंगे।

प्रबन्धक

मक्कारी और अय्यारी के बग़ैर भी ज़िन्दगी गुज़ारी जा सकती है

अब्दुल गफ़्फार सिद्दीक़ी बिजनौर

—हिन्दी रूपान्तरः इं0 जावेद इक़बाल

दुनिया में इंसान की जिंदगी चंद दिनों की है उसे नहीं मालूम कि ये चंद दिन कितने दिनों पर जा कर थमे गा और न उसे यह मालूम है कि जिंदगी में वह किन किन मरहलों से गुजरेगा। बच्चा जवानी की दहलीज तक पहुंचेगा या नहीं, नौजवान अपना बुढ़ापा देखेगा या नहीं, उसे कुछ नहीं मालूम। मौत की तलवार विभिन्न शक्लों में इंसान के सर पर लटक रही है। कहीं सड़क पर ट्रैफिक की कोई दुर्घटना उसका इंतजार कर रही है तो कहीं जंगल की आग है जो हवा के जोर पर फैलती है और लांस एंजेलिस की तरह पूरे पूरे शहर को राख का ढेर बना देती है। कल तक दूसरों की तबाही पर खुशियां मनाने वाले अपनी आग में झुलसेंगे पता नहीं था। कहीं मूसलाधार बारिश का पानी बाढ़ की शक्ल में तबाही मचाता है, कहीं बिजली का तार टूट कर इंसान पर गिरता है और उसकी मौत का सबब बन जाता है, कहीं शहद की मक्खियां उस पर चिमट जाती हैं और काम तमाम कर देती हैं। कहीं अय्याशी और शराब मौत का बहाना बन जाती है। गरज मौत इतने तरीकों से आती है कि बयान नहीं किया जा सकता।

इस में कोई शक नहीं कि इंसान ने दुनिया में हैरान कर देने वाली तरक्की की है, उस ने आसमानों पर कमंदें डाली हैं, ज़मीन की गहराइयों में झांका है और समंदरों को खंगाला है। टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में आश्चर्यजनक आविषकार करके ईश्वर का उत्तराधिकारी होने का हक़ अदा कर दिया है। असंभव समझे जाने वाले अनेक कामों को उसने संभव बना डाला, मगर वह खुद को मौत से न बचा सका। बेहतरीन साफ़ शफ़्फ़ाफ़ हाईवेज तो बना लिए मगर वह अपने ज़ेहन में सिविक सेंस न पैदा कर सका। बीच सड़क पर गाड़ी रोक कर पेशाब करना या सिगरेट सुलगाना, इससे भी बढ़ कर एकल दिशा मार्ग पर विपरीत दिशा से चलना, ये ऐसी गल्तियां हैं जो भयानक दुर्घटनाओं का कारण बनती हैं। इंसान ने चिकित्सा के क्षेत्र में एक से बढ़ कर एक रोग निवारक दवाएं बना लीं और उच्च स्तरीय अस्पताल क़ायम कर दिए मगर इंसान के दिल दिमाग में हमदर्दी व ईमानदारी के जज़्बात न पैदा कर सका बल्कि मक्कारी और अय्यारी के नित नए रिकॉर्ड उसने बना डाले। नक़ली दवाएं, अनावश्यक जांचें, जिस्म के अंदरूनी अंगों की चोरी और फिर उनका व्यापार, क्या क्या नहीं हो रहा है आज इस दुनिया में।

आज का इंसान भूतकाल के इंसान के मुक़ाबले ज़्यादा मक्कार हो गया है। आप ख़ुद अपने ऊपर नज़र डालें और देखें कि दूसरों को तो बाद में पहले ख़ुद अपने आप को कितना धोका दे रहे हैं, कितना जुल्म कर रहे हैं अपने ऊपर। आप बीमार हैं, डायबिटिक हैं या अलसर के मरीज हैं मगर ज़बान के चटख़ारे के लिए मिठाइयां खा रहे हैं या मिर्च भरी बाज़ारु चाट उड़ा रहे हैं। आप पहले ख़ुद अपना जायज़ा लीजिए, क्या आप रिशवत तो नहीं ले रहे, क्या निर्माण कार्यों में सीमेंट—सरिया के निर्धारित अनुपात में हेर फेर तो नहीं कर रहे।

आज की दुनिया में दो चार प्रतिशत को छोड़ कर अधिकांश का यही हाल है। अफसोस उन पर नहीं जिन के यहां आख़रित का तसव्वुर स्पष्ट

नहीं, अफ़सोस तो उन पर है जो आख़िरत पर यकीन के दावेदार हैं, मगर फिर भी हर क़दम पर लोगों को धोका दे रहे हैं। साथ ही हर साल उमरा पर जाकर गुनाहों से माफी के तलबगार हैं। क्या ये ख़ुदा को धोका दे रहे हैं? हक़ीक़त में ये ख़ुद को धोका दे रहे हैं।

सवाल यह है कि क्या इंसान को दुनिया की चंद दिन की जिंदगी गुजारने के लिए इन मक्कारियों, चालबाजियों और मुनाफिक़ाना तरीक़ों की वाक़ई ज़रूरत है? क्या यह संभव नहीं कि किसी को धोका दिये बगैर जिंदगी गुजारी जाए? क्या हमारी शारीरिक ज़रूरतें जायज़ और ह़लाल तरीकों से पूरी नहीं हो सकतीं?

अगर आपका जवाब यह है कि बेईमानी के बिना भी जिंदगी गुजारी जा सकती है, बस इतना है कि ऐश नहीं किए जा सकते, गुलछर्रे नहीं उड़ाए जा सकते। तो फिर लात मारिये दुनिया के ऐश व आराम पर, ताला लगाइये बेईमानी और झूठ व मक्कारी के दरवाजों पर।

और यह पसंद कीजिए कि मैं किसी के साथ धोका धड़ी नहीं करूंगा, चोरी चकारी के नये—नये तरीक़े तलाश नहीं करूंगा। और अगर आप कहते हैं कि आज के जमाने में ईमानदारी से काम नहीं चलता, जैसा कि आम तौर से लोग कहते हैं तो फिर नैतिक मूल्यों पर आधारित सभी किताबें किसी जलाशय में बहा दीजिए। तमाम आस्मानी किताबों को भुला दीजिए। इबादतगाहों, पूजा स्थलों की जगहों पर जुआ और शराब के अड्डे बना दीजिए। मगर दुनिया में नित नए इबादतख़ानों के निर्माण को देख कर तो यही अंदाजा होता है कि आप ख़ुदा रसूल और आसमानी किताबों पर यक़ीन रखते हैं। आप में से अधिकांश मौत के बाद जिंदगी के क़ायल हैं। फिर बताइए हमारी और आपकी अमली जिंदगी में धोका और फरेब क्यों है?

मैं समझता हूं कि दुनिया की चंद दिनों की जिंदगी शराफत, ईमानदारी, नेकी और तक़वा के रास्ते पर चल कर भी बड़े इत्मीनान व सुकून के साथ गुजारी जा सकती है, बल्कि मक्कारी और धोका धड़ी वाली जिंदगी में जो बेइत्मिनानी और डर पाया जाता है उससे भी छुटकारा मिल सकता है।

जब तक दुनिया में ख़ुदा के दीन की रौशनी मौजूद है और जुल्म व मक्कारी को बुरा समझा जाता है उस समय तक अनैतिक कार्य करने वाला प्रत्येक व्यक्ति अंदर से ख़ुद को मुजरिम समझता है और मुजरिम सुकून व इतमिनान की दौलत से सदा महरूम रहता है। वह रात को सुकून से सो नहीं पाता, उसे नींद की गोलियों का सहारा लेना पड़ता है। हर अपराधी अपने अपराध के भार के अनुसार बेसुकूनी की जिंदगी गुज़ारता है, और एक दिन इसी बेसुकूनी की हालत में वह ख़ुद को मौत से नहीं बचा पाता।

क़ुरआन मजीद इस बात की जमानत देता है कि अगर इंसान शराफत व ईमानदारी की जिंदगी गुज़ारना चाहे तो उसके लिए कोई मुश्किल नहीं है। क़ुरआन पाक में अल्लाह तआला फरमाता है जो मर्द या औरत नेक अमल करे और वह मुसलमान हो तो हम ज़रूर उसे पाकीजा जिंदगी देंगे और हम ज़रूर उन्हें उनके अच्छे कामों का इनाम देंगे (अल—नहल)।

पाकीज़ा जिंदगी ही क्या, बल्कि ऐसे लोगों के लिए जमीन व आसमान से ज़रूरियात जिंदगी की बारिश होती है। इसीलिए तो अहले किताब को संबोधित करके फरमाया गया है ''और यदि वह तौरात व इंजील को क़ायम रखते और अन्य किताबों को जो उन पर उनके रब की ओर से उतारी गई हैं, तो अपने ऊपर से और अपने पैरों के नीचे से खाते''। (अल—मायदाः 66)

शेष पृष्ठ ...37...पर

ईद का जोड़ा

मायल ख़ैराबादी

''मैं यह टोपी नहीं, यह फूलों वाली लूंगा।''

''अच्छा भाई यही ले लो'' और अब्बा जान ने फूलों वाली टोपी सईद को खरीद दी। वहाँ से उठे तो हम जूतों की दुकान पर गये। वहाँ भी सईद ने न जाने कितने जूते निकलवा कर एक पसन्द किया और उसी पर अड़ गया। अब्बा जान ने उसको पसन्द का जूता भी ले दिया।

ईद के कई दिन बाकी थे। सईद कुर्ता, टोपी, रूमाल वगैरा के लिये एक शोर मचाये हुए था। लेकिन जब उसके लिये ये सब कुछ आ गया और उसने देखभाल कर खुशी खुशी रख भी लिया तो दूसरे दिन से न जानें क्यों उदास रहने लगा। मैंने उसे चुप चुप देखा तो अम्मी से कहा। उन्होंने अब्बा जान से कहा। सबने मिलकर सोचा मगर कोई समझ न सका कि बात क्या है। सईद ने अपनी पसन्द की चीजें पाने पर चुप क्यों साध ली है क्यों इतना उदास रहने लगा है।

एक बार मैंने पूछा भी लेकिन वह कुछ न बोला। आखिर एक दिन बहला फुसला कर अम्मी ने अपने पास बिठाया। बोली, ''सईद मियाँ की टोपी सबसे अच्छी है, है ना सईद मियाँ।'' लेकिन सईद ने कोई दिलचस्पी न ली। अब मैंने कहा, ''जूता भी भड़कदार है, इसमें मोती भी तो टंके हैं।'' मेरी बात सुनी तो खिसियानी हंसी हंसने लगा। अब राशिदा बाजी की बारी थी। उन्होंने कहा, ''और मैंने सईद मियाँ का रूमाल कैसा अच्छा काढ़ा है, कैसे रंग बिरंगे फूल बनाये हैं।''

इसके बाद अब्बा जान ने कुछ कहा, फिर छोटी अपिया ने, फिर फूफीजान ने।

सईद इस तरह की बातों से हमेशा खुश होता था और सबसे ज्यादा अपनी चीजों की प्रशंसा करता था और किसी को हाथ न लगाने देता था। लेकिन आज पहले तो सुनकर उदास उदास हंसी हंसा फिर न जाने उसे क्या सूझी, वह उठा जल्दी जल्दी गया और अपना ईद का जोड़ा लाकर अम्मी के आगे डाल दिया और साथ ही बोलाः

''मैं नहीं पहनता यह जोड़ा'' और रोने लगा।

अब तो हम सबको बड़ी परेशानी हुई, इस वक़्त नाराज़गी की कोई बात भी न थी। छोटी अपिया ने भी उसे न छेड़ा था। लेकिन आखिर कुछ न कुछ हुआ होगा। मुझसे पूछा गया, बाजी से, अपिया से, सबसे अब्बा जान ने पूछा। कोई कुछ न बता सका। तो अब्बा जान ने प्यार के साथ कहा, ''हम इससे अच्छा जोड़ा सईद मियाँ के लिये बनवा देंगे।''

सईद कुछ कहते कहते रुक गया। अब्बा जान ने कुछ सोच कर कहा, ''हाँ बेटे बताओ ना, इस जोड़े को क्या करोगे?''

सईद ने अब्बा जान को देखा, ''बताऊँ'' ––''अच्छा नहीं बताऊँगा।''

अब सब समझ गये कि बस इसी बात में कोई बात है।

अम्मी जान ने उसे चुमकारा और पूछा, ''हाँ बेटे! यह जोड़ा.... ।''

वे पूरी बात न कह सकीं थीं कि सईद मियाँ बीच ही में बोल उठे।

''अम्मी! फिर यह जोड़ा राशिद को दे दूँ?''

''कौन से राशिद को?'' अब्बा जान ने पूछा।

''अब्बा जान! मेरा दोस्त राशिद, वह जो कल आया था, मैंने उसे अपनी टोपी दिखाई, रूमाल दिखाया, कुर्ता दिखाया। वह बैठा देखता रहा। फिर मैंने उससे पूछा, ''राशिद तुम्हारा जोड़ा

शेष पृष्ठ ...35...पर

वफ़ादारी

(इदारा)

एक आदमी को कुत्ते पालने का शौक था वह जहाँ कोई अच्छा कुत्ता देखता अगर वह किसी आदमी का होता तो उसे खरीद लेता अगर आजाद होता तो कुछ खिलाकर अपने से मिला लेता। एक बार एक जंगली कुत्ता उससे मिल गया। किस तरह हिल गया ! यह किस्सा बड़ा दिलचस्प है और फिर बाद के किस्से तो ऐसे हैं कि पढ़ कर इंसान दंग रह जाता है पहले उसके हिल जाने का किस्सा सुनिये।

वह आदमी जंगल से गुजर रहा था उसके पास खाना बंधा था वह थोड़ी दूर जंगल में गया था कि एक कुत्ता गुर्रा कर झपट पड़ा। वह आदमी भागा, लेकिन कुत्ता पास आ गया बस इतनी दूर कि एक छलांग में उसे दबोच सकता था और सचमुच उसने छलांग भी लगा दी।

छलाँग लगाने पर उस आदमी का थैला कुत्ते के मुँह में आ गया वह आदमी थैला छोड़कर भागा और पास के एक पेड़ पर चढ़ गया। उसने देखा कि कुत्ता थैले को दाँतों से थंथोड़ रहा था कुत्ते ने थैले को नोच डाला इसी थैले में उस आदमी का खाना था थैला फटा तो उसमें रोटियाँ और कबाब निकल पड़े। कुत्ते ने पहले कबाब खाये फिर रोटियों की तरफ देखा उसने रोटियाँ नहीं खायी उसने बड़ी मजेदार बात यही की कि रोटियाँ जो मुँह में दबा सका दबाकर पेड़ के नीचे ले गया पेड़ की जड़ पर डाल दिया और फिर चला गया फिर कुछ रोटियाँ ले आया तीन बार में वह कुल रोटियाँ ले आया।

रोटियाँ पेड़ की जड़ पर डालकर उसने ऊपर मुँह उठाया, दुम हिलाने लगा। फिर इस तरह कू कू कू करने लगा जैसे वह उस आदमी को बुला रहा हो वह आदमी एक मुद्दत से कुत्ते पाल रहा था। वह कुत्तों की आदतों को समझता था वह समझ गया कि कुत्ता अब गुस्से में नहीं है बल्कि इसीलिए बुला रहा है कि वह उससे मेल कर लेगा वह आदमी किसी डर के बगैर पेड़ से उतर आया सचमुच कुत्ता उसके पैरों से लिपट गया और दुम हिला हिला कर अपनी मुहब्बत जताने लगा। फिर जब वह आदमी रोटियाँ बांध कर चला तो वह कुत्ता भी साथ हो लिया कुत्ते को उसने पाल लिया। आगे चलकर यही कुत्ता सारे कुत्तों से ज़्यादा उससे हिल गया और हर वक़्त अपने मालिक के पास रहने लगा।

एक बार सुबह ही सुबह किसी जरूरत से वह आदमी कहीं जाने लगा तो कुत्ता पीछे हो लिया उसने चाहा कि कुत्ता लौट जाये मगर कुत्ता किसी तरह न लौटा मालिक ने एक ढेला भी मारा तब भी न लौटा उसे मकान के आँगन में करके दरवाजा बन्द कर लिया तो कुत्ता आँगन से जीने के जरिये छत पर पहुँचा और छत से नीचे फाँद पड़ा और फिर उसके पीछे हो लिया।

कुछ दूर के बाद कुछ लोगों ने उस आदमी को क़त्ल करने की ठानी जिस वक़्त वह उसे क़त्ल कर रहे थे तो कुत्ते ने अपने मालिक की मदद की मदद करने में उसके कई जख्म भी आये । लोगों ने उस आदमी को क़त्ल कर दिया और चले गये। कुत्ता वापस घर लौट आया। घर पर उस आदमी की माँ थी उसने कुत्ते को जख्मी देखा तो समझ गई कि बेटे को कहीं क़त्ल कर दिया गया है फिर वह कुत्ते के साथ गई और बेटे की कटी फटी लाश उठा

लाई, और फिर उसे दफन करा दिया उसके बाद उसने घर के सारे कुत्तों को निकाल दिया उस कुत्ते को भी निकाल दिया।

यह कुत्ता दरवाजे के बराबर वाली गली में रहने लगा। एक दिन ऐसा हुआ कि एक आदमी उधर से निकला कुत्ता उस पर झपट पड़ा और उससे चिपट गया। लोग छुड़ाने दौड़ पड़े लेकिन कुत्ते ने किसी तरह न छोड़ा लोगों ने धत धत के बाद लाठी और डंडों से मारा भी मगर कुत्ता बुरी तरह उससे चिपटा हुआ था वह उसे खींच कर बुढ़िया के घर की तरफ ले जाना चाहता था।

अब सुनिये, बुढ़िया भी शोर सुन कर तमाशा देखने आ गई, उसने उस आदमी को देखकर कहा इस आदमी को मेरे बेटे से दुश्मनी थी। हो सकता है कि इसी ने मेरे बेटे को क़त्ल किया हो और अब कुत्ते ने पहचान लिया है।

यह बात सामने आई तो लोग उस आदमी को काजी के पास ले गये लेकिन बुढ़िया कुत्ते के अलावा कोई गवाह पेश न कर सकी इसीलिए काजी ने उसे छोड़ दिया वह आदमी कचेहरी से जब घर जाने लगा तो फिर कुत्ता उसके पीछे हो लिया काजी अक़्लमन्द आदमी था इसलिए एक सिपाही को पीछे लगा दिया जब वह आदमी घर में गया तो कुत्ता भी उसके घर में गया घर में जाकर वह एक जगह खुरचने लगा। अब उस सिपाही ने जाकर काजी को बताया कि कुत्ता एक जगह मिट्टी हटा रहा है। काजी ने फिर भेजा और कहा कि जाकर उस जगह की मिट्टी हटाओ और फिर रिपोर्ट दो, सिपाही अपनी मदद के लिए दो सिपाही और ले गया, इतनी देर में कुत्ते ने बहुत सारी जमीन खुरच डाली थी। जब मालिक मकान उसे भगाता तो वह गुर्राकर उस पर झपट पड़ता इतने में यह सिपाही पहुँचे वह जगह खोदी गई तो उसमें से कुत्ते के मालिक का लिबास निकला।

सिपाहियों ने उस आदमी को पकड़ लिया अदालत में ले गये। मुक़दमा फिर से चालू हुआ और काजी ने उसे फाँसी की सजा दे दी।

यह किस्सा पढ़ कर हैरान और दिल में कहेंगे कि अल्लाह तआला ने कुत्ते को कैसी सूझ बूझ दी है और वह अपने मालिक का कैसा वफादार होता है फिर हम को ख़्याल आता है कि अल्लाह तआला ने तो हम इंसानों को सबसे बढ़ कर बनाया है और तरह तरह से हम सब पर अपनी रहमत नाजिल फरमायी है। क्या हम अपने अल्लाह के लिए अपनी जान को जोखिम में डाल सकते हैं और कहाँ हम अपने मालिक के हुक्म पर चलते हैं तो फिर यह कुत्ता हम से अच्छा है या हम इससे अच्छे हैं।

❖❖❖

पृष्ठ ..33...का शेष

कैसा बना? मेरे यह पूछने पर वह रोने लगा।''

''अच्छा यह बात है।'' हम सब समझ गये– राशिद बेचारा यतीम बच्चा, उस गरीब को किसने जोड़ा बनवा कर दिया होगा, बस उसी का असर है सईद पर।

फिर क्या था। एक छोटे से बच्चे की इस जरा सी बात को हम बड़ों ने बहुत कुछ समझा दिया। फिर बाजी ने, अपिया ने मिल कर जल्दी जल्दी कुर्ता, रूमाल और पाजामा तैयार किया। अब्बाजान टोपी और जूता लाये–फिर?''

फिर कुछ न पूछिये सईद की खुशी! ईद में जब राशिद ने सईद मियां के साथ कपड़े पहने तो ऐसा लगता था कि सईद मियाँ को जन्नत मिल गई, और सईद मियाँ ही को क्या हमें भी ईद की सच्ची खुशी उसी दिन हुई। हम सबने सईद मियाँ को खूब दुआयें दीं।

❖❖❖

ईदुल फित्र का संदेश

मौलाना इक़बाल नदवी

ईद अरबी भाषा का एक शब्द है जिसका अर्थ होता है बार बार पलट कर आने वाला ख़ुशी का दिन, यह इस्लाम धर्म के अनुसार प्रत्येक वर्ष दो बार आता है एक रमज़ान के महीने के समापन पर तथा दूसरा इस्लामी महीने ज़िलहिज्जह की दसवीं तारीख को, दोनों ईदें प्रेम व भाईचारे, शांति, दया, ईश्वर के मार्ग में दान पुण्य करना तथा आपसी एकता की भावना उत्पन्न करने का संदेश देती हैं, ईद के अवसर पर लोग न केवल अपने परिवार और दोस्तों के साथ खुशियां बाँटते हैं बल्कि समाज में ज़रूरतमन्दों की मदद भी करते हैं, जिससे समाज में समानता और सहानुभूति की भावना बढ़ती है, ईद के दिन मुस्लिम समुदाय के लोग नये वस्त्र पहन कर ईदगाह और बड़ी–बड़ी मस्जिदों में खुदा की बड़ाई बयान करने जाते हैं और अपने तमाम परिवार वालों की तरफ़ से सदक़–ए–फित्र (दान) अदा करते हैं इससे वह लोग भी खुशियों में भागीदार बनते हैं जो समाज में गरीब और दबे कुचले लोग जाने जाते हैं, मुसलमानों की ईद की खुशियों में चार चाँद जब ही लगते हैं जब वह पूरे समुदाय के साथ एक स्वर एक हालत में खुदा की प्रशंसा करते हैं। क्योंकि यह त्यौहार भाई चारे और सौहार्द का प्रतीक होता है। सामाजिक और मानवीय दृष्टि से अगर देखा जाए तो यह एक ऐसा पर्व और त्योहार है जो सबको गले लगाने का संदेश देता है, सामाजिक ऊँच नीच इसके मार्ग में रुकावट नहीं बनती। रमज़ान का महीना समाप्त होते ही पूरे महीने रोज़ा रखने वाले खुदा के बन्दे उसका शुक्र अदा करते हैं उसके समक्ष नतमस्तक होते हैं न वहां अमीर व ग़रीब के बीच कोई ऊँच नीच और ना ही जात पात के झगड़े, अल्लाह के सामने सब उसके बन्दे होते हैं ईदगाह में लोगों की इतनी बड़ी संख्या का अनुशासन देखिए जैसे ही इमाम साहब लोगों को सीधी लाइन में खड़े होने का ऐलान करते हैं सारे लोग एक क्षण में सीधे खड़े हो जाते हैं ना कोई शोर शराबा ना किसी प्रकार का कोई हंगामा ना पुलिस फोर्स की आवश्यकता और ना ही किसी बड़े अधिकारी को कोई समस्या होती है क्योंकि समस्त लोगों को बस एक ही धुन होती है कि खुदा उनके रोज़ों को कबूल फरमा कर सदैव सत्य और नैतिकता के पथ पर जीवन व्यतीत करने का अवसर प्रदान करे। ईद का त्योहार प्रेम व भाईचारे तथा एकता और समानता को बढ़ावा देता है। ग़रीबों और ज़रूरतमन्दों की सहायता करने परिवार, दोस्तों और समाज को एक जुट होने की भावना उतपन्न करता है, क्षमा, दया, करूणा की बहती हुई दरिया को और अधिक बढ़ावा देता है। यह केवल एक त्योहार नहीं बल्कि मानवता, त्याग, आपसी सौहार्द के संदेश की पूरी सभ्यता और संस्कृति होती है। रिश्तेदारों दोस्तों, पड़ोसियों से मिलकर प्रसन्नता और खुशी के रंग में रंगा यह पर्व संदेश देता है कि मानव को खुशी हो या ग़म सुख का वातावरण हो या दुख का समस्त समाज एक दूसरे के साथ खड़ा रहे एक दूसरे के साथ मिल बैठ कर खुशियाँ मनाने का आनन्द ही कुछ और होता है। जीवन की रफ़्तार में

कभी कभी एक साथ रहते हुए कुछ मन मुटाव भी हो जाता है। ईद का त्योहार उन सारे गिले शिकवों को भुला कर एक दूसरे के गले मिल कर ईद की बधाई देना बड़ों के साथ आदर–सम्मान से पेश आना, छोटों के प्रति दया की भावना को जमाए रखने का मुख्य संदेश देता है। इस दिन के कुछ मुख्य कार्य और भी होते हैं। जैसे सुबह सवेरे उठना, स्नान करना अच्छे और स्वच्छ कपड़े पहनना, इत्र खुशबू लगाना खुदा की प्रशंसा करते हुए ईदगाह या मस्जिद जाना, नमाज़ से पूर्व सदक़–ए–फित्र अदा करना फिर नमाज़ पढ़ना, मीठे पकवान बनाना और उसको खा कर नमाज़ के लिए जाना इबादत और बन्दगी की भावना प्रकट करते हुए इस्लाम की सभ्यता को दर्शाना, इसके साथ ही एक दूसरे को ईद की मुबारकबाद देना, बुजुर्गों का आशीर्वाद लेना, छोटों को ईदी (तोहफ़ा) देना ईदुल फित्र के दिन उक्त कार्य मुख्य रूप से किये जाते हैं। जिस पवित्रता और स्वच्छता के साथ मुस्लिम समुदाय के लोग रमज़ान के महीने में ज़िन्दगी गुज़ारते हैं उसी प्रकार पूरा जीवन व्यतीत करने का संकल्प लेना और अपने जीवन को उच्च आदर्शों और संस्कारों के साथ बिताना ईदुलफ़ित्र का संदेश है। तो आइए हम सब मिलकर खुदा से प्रार्थना करें कि हम सब के जीवन में बार–बार रमज़ान का महीना आये और हम सब उसका स्वागत नेकियों की उमंगों के साथ करें, अच्छाई का पथ हमारा मार्ग है। नैतिक मूल्यों के साथ एक पाक साफ़ ज़िन्दगी गुज़ारने का संकल्प करें ऐसा जीवन जो हमारे अन्दर इस्लामी सभ्यता को अपनाये रखने का हौसला प्रदान करे क्योंकि हमारा जीवन अगर रमज़ान होगा तो हर मैदान में ईद की खुशियाँ नसीब होंगी और फिर मरने के बाद एक ऐसी ईद होगी जिसका उदाहरण शब्दों में नहीं दिया जा सकता है।

❖❖❖

(लेखकः माहद सिकरौरी के उस्ताद हैं)

पृष्ठ ..32...का शेष

दुनिया की जिंदगी में सबसे आख़िरी चीज जिस की इंसान तमन्ना कर सकता है वह ताज व तख़्त है। कुरआन में इस का भी वादा मौजूद है। सूरः नूर की आयत नं०– 55 में फरमाया गया है ''अल्लाह ने तुममें से ईमान के साथ अच्छे आमाल करने वालों से वादा फरमाया है कि ज़रूर ज़रूर उन्हें ख़िलाफत (सत्ता) देगा जैसी उनसे पहले की क़ौमौं को दी है''।

सारी दुनिया को छोड़िए, अल्लाह और उसके रसूल हजरत मुहम्मद सल० पर ईमान का दावा करने वाली उम्मत को तो मक्काराना रवैय्या से तौबा करना ही चाहिए, एक तरफ कुरआन के हर शब्द को सच्चा माना जाता है दूसरी ओर मक्कारी में लिप्त अधिकांश संख्या मुसलमानों की है। जब कुरआन पाक में अल्लाह तआला ने तमाम जीवों को आजीविका देने का वादा किया हुआ है और हम अपनी आंखों से देख रहे हैं कि अल्लाह अपनी उन मख़लूक़ात को भी रोजी दे रहा है जो कोई व्यापार नहीं करतीं, जबकि उनकी संख्या इंसानों से लाखों गुना ज़्यादा है, तो फिर इंसान जिसे अक़्ल दी गई है समझ दी गई है और सारी क़ायनात उसकी सेवा में लगी हुई है और जिसे सर्वश्रेष्ठ सृष्टि (अशरफुल मख़लूक़ात) की उपाधि प्राप्त है, उसे किस बात का भय है, वह क्यों झूठ, फरेब, धोका और मक्कारी से काम ले रहा है?

❖❖❖

ऐलाने मिल्कियत व अन्य विवरण फार्म-4 नियम-8

प्रकाशन का स्थान	–	नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ–7
प्रकाशन अवधि	–	मासिक
सम्पादक	–	सैय्यद मो0 गुफ़रान नदवी
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ–7
मुद्रक एवं प्रकाशक	–	मोहम्मद ताहा अतहर
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	223 बगरिया दुबग्गा, काकोरी, लखनऊ, उ0प्र0–227107
मालिक का नाम	–	मजलिसे सहाफत व नशरियात

मैं, मोहम्मद ताहा अतहर प्रमाणित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरे विश्वास व जानकारी में सही हैं।

पृष्ठ ..08...का शेष

अच्छे तरीके पर करने का हुक्म दिया है, जब तुम ज़बह करो तो आसानी का ख्याल रखो और जब जबह करो तो भलाई के साथ जबह करो, अपनी छुरी तेज कर लो ताकि जबीहा (जिस जानवर को जबह किया जाए) को कष्ट न हो। (मुस्लिम)

पहलवान की पहचानः–

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः पहलवान वह नहीं जो किसी को पछाड़ दे, पहलवान वह है जो गुस्से के वक्त अपने को काबू में रखे। (बुखारी व मुस्लिम)

नर्मी में बड़ी भलाई हैः–

हज़रत अबू दर्दा रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः जिस आदमी को नर्मी में से हिस्सा दिया गया (हक़ीक़त में) उसको भलाई में से हिस्सा दिया गया और जो नर्मी के हिस्से से वंचित रहा वह (वास्तव में) भलाई के हिस्से से वंचित रहा। (तिर्मिजी)

वह आदमी जिस पर जहन्नम हराम हैः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः क्या मैं तुम (लोगों) को ऐसे आदमी के बारे में न बता दूँ जो जहन्नम (की आग) पर हराम कर दिया जाएगा या जिस पर जहन्नम की आग हराम है, हर वह आदमी जो पास रहने वाला हो, नर्म हो और आसानी का मामला करने वाला हो।''

(तिर्मिजी)

सब्र और माफ करने वाले पर अल्लाह का इनामः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 से अल्लाह का फरमान ''इद्फअ् बिल्लती हिय अहसनु'' के बारे में नकल किया गया है कि (यहाँ मतलब) गुस्सा के समय धैर्य, और बदसुलूकी के समय माफी है, जब वो ऐसा करेंगे तो अल्लाह तआला उनकी सुरक्षा करेगा, और उनके सामने उनके दुश्मनों को झुका देगा।

स्वास्थ्य

मुलेठी का सेवन शरीर को रखेगा रोगमुक्त

डॉ0 विभू पाण्डेय, आयुर्वेदाचार्य

मुलेठी एक गुणकारी जड़ी बूटी है। आमतौर पर लोग इसका इस्तेमाल सर्दी जुकाम या खांसी में आराम पाने के करते हैं। गले की खराश को दूर करने के लिए भी यह असरदार होता है। मुलेठी का इस्तेमाल आयुर्वेदिक दवाओं में बहुतायत किया जाता है। मुलेठी एक झाड़ीनुमा पौधा होता है। आमतौर पर इसी पौधे के तने को छाल सहित सुखा कर उसका उपयोग किया जाता है। इसके तने में कई औषधीय गुण होते हैं। इसका स्वाद मीठा होता है। यह दांतों, मसूड़ों और गले के लिए बहुत फायदेमंद है। आज हम मुलेठी के फायदे और सेवन के तरीकों के बारे में बताएंगे।

मुलेठी
कई रोगों में लाभकारी है। यह वात और पित्त दोष को कम करती है। शरीर के बाहरी हिस्सों की बात करें तो यह त्वचा रोगों और बालों के लिए फायदेमंद है। मुलेठी के प्रयोग से खून साफ़ होता है, बाल बढ़ते हैं और बुद्धि तेज होती है।

खांसी या सूखी खाँसी में:-

मुलेठी मुंह में रख कर देर तक चूसते रहने से खाँसी से आराम मिलता है। अगर आपको सूखी खांसी है तो एक चम्मच मुलेठी को शहद के साथ मिलाकर दिन में 2-3 बार चाटकर खाएं। इसी तरह मुलेठी का काढ़ा बना कर 20-25 मिली मात्रा का सुबह और शाम को सेवन करने से मुलेठी का पूरा फायदा मिलता है।

बाल के लिए उपयोगी:-

मुलेठी का उपयोग बालों को सही पोषण देने और बढ़ाने में भी किया जाता है। मुलेठी से बालों को धोने से बाल तेजी से बढ़ते है। मुलेठी और तिल को भैंस के दूध में पीस कर सिर पर लेप लगाने से बालों का झड़ना बंद हो जाता है।

आँखों के रोगों में:-

आँखों में जलन होने पर भी मुलेठी का इस्तेमाल करने से फायदा पहुंचता है। इसके लिए मुलेठी के काढ़ा से आखों को धोएं। इसके अलावा मुलेठी चूर्ण या मुलेठी पाउडर में बराबर मात्रा में सौंफ का चूर्ण मिलाएं।

पेट के अल्सर में फायदेमंद:-

पेट के अल्सर का इलाज कराना बहुत ज़रुरी है। मुलेठी का इस्तेमाल करके भी आप पेट के अल्सर को ठीक कर सकते हैं। इसके लिए एक चम्मच मुलेठी पाउडर को एक कप दूध के साथ दिन में 3 बार सेवन करें।

मुँह के छालों में राहत:-

मुँह के छालों से परेशान रहते हैं तो मुलेठी के औषधीय गुणों का फायदा क्यों नहीं उठाते हैं। अगर मुँह में छाले हो गए हैं तो मुलेठी के कुछ टुकड़े लें और उसमें शहद मिलाकर चूसें। इससे छाले जल्दी ठीक होते हैं।

सिरदर्द से आराम:-

अगर आप अक्सर सिरदर्द से परेशान रहते है तो मुलेठी आपके लिए बहुत काम की चीज है। मुलेठी पाउडर के एक भाग में इसका चौथाई भाग कलिहारी चूर्ण और थोड़ा सा सरसों का तेल मिलाएं। इसे सूंघने से सिरदर्द से आराम मिलता है।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ - ٹیگور مارگ
لکھنؤ - ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक: <u>22/02/2025</u> तारीख ________

अहले ख़ैर हज़रात से !

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा, हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी, दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंजाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों को सीने से लगाए हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था यानी नये ज़माने में इस्लाम की प्रभावी और सही व्याख्या, दीन और दुनिया तथा इल्म और रूहानियत को यकजा करने की कोशिश, दीन से दूरी और नफ़रत को ख़त्म करने के प्रयास, इस्लाम पर विश्वास और इस्लामी उलूम की बलन्दी और विशेषता के ऐलान, दीने हक़ से वफ़ादारी और शरीअ़त पर मज़बूती से जमने के सिद्धान्तों पर कायम है।

आप से हमारी दरख़्वास्त है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत, (उपयोगिता) को समझते हुए पूरी फ़य्याज़ी और फ़राख़दिली और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर मदद फ़रमाएं कि हिन्दुस्तान में दीन के क़िलों की हिफ़ाज़त की इससे बेहतर कोई शक्ल और इससे ज़्यादा मज़बूत कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

लिहाज़ा आप हज़रात से गुज़ारिश है कि अपने सदक़ात अतियात, चेक या ड्राफ़्ट के ज़रिये और ऑन लाइन नदवतुल उलमा के निम्नलिखित एकाउन्ट में ट्रान्सफ़र फ़रमायें, ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में आपका सहयोग बहुत ही अहमियत रखता है। अल्लाह तआला हम सबकी कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाए और उनको हमारे लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए। आमीन।

मौलाना सैयद अम्मार अब्दुल अली हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW- IFSC: SBIN0000125
ONLINE DONATION LINK: https://www.nadwa.in/donation

SCAN HERE TO VISIT THE WEBSITE FOR DONATION

ZAKAT — NADWATUL ULAMA

ATIYA — NADWATUL ULAMA

BUILDING — NADWATUL ULAMA

UPI करते समय रिमार्क में मद (ज़कात/अतिया/तअ़मीर) अवश्य डालें।

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं08736833376 पर इत्तिला ज़रूर करें।

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को Section 80G income Tax act 1961के तहत छूट प्राप्त होगी।

Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/Website: www.nadwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

अहले ख़ैर हज़रात की ख़िदमत में

रमज़ानुल मुबारक 2025 में नदवतुल उलमा के लिए माली तआवुन हासिल करने की ग़रज़ से जिन असातिजह, कारकुनान व मुहस्सिलीन को जिस शहर या इलाक़े में भेजा जा रहा है, उसकी तफ़्सील नीचे दी जा रही है, अहले ख़ैर हज़रात से तआवुन की दरख़्वास्त है।

—मौलाना फ़ख़रुल हसन ख़ाँ नदवी,

(नाजिर शो—बए—तामीर व तरक्की नदवतुल उलमा, लखनऊ)

क्रमांक	अस्माए गिरामी (नाम)	मोबाइल नं0	उहदा (पद)	इलाक़ा या शहर
1	कारी फ़ज़्लुर्रहमान सा0 नदवी	9919490477	उस्ताद हिफ़्ज़	मुम्बई
2	हाफिज अब्दुल वासे साहब	9307884504	उस्ताद हिफ़्ज़	मुम्बई, भिवन्डी, मालेगांव, धूलिया
3	मौ0 अब्दुल वकील साहब नदवी	9889840219	कारकुन शो—बए—इस्लाह मुआशरा	मुम्बई
4	मौ0 मुहम्मद इस्माइल सा0 न0	8604346170	उस्ताद माहद (महपतमऊ)	मुम्बई
5	मौ0 अब्दुल्लाह साहब नदवी	7499549301	कारकुन द0 दारुल उलूम	मुम्बई न्यु मुम्बई
6	मौ0 मुहम्मद असलम साहब मजाहिरी	9935219730	उस्ताद दारूल उलूम	मद्रास, विजयवाड़ा
7	मौ0 मुहम्मद इरफान सा0 नदवी	7505873005	उस्ताद माहद (महपतमऊ)	मद्रास, विजयवाड़ा
8	मौ0 शफीक अहमद साहब बांदवी नदवी	9935997860	उस्ताद माहद दारूल उलूम (सिकरौरी)	पटटन, पालनपुर व अतराफ
9	मौ0शमीम अहमद साहब नदवी	9935987423	उस्ताद दारूल उलूम	हैदराबाद, निजामाबाद, नान्देड़
10	मौ0 अनीस अहमद साहब नदवी	9450573107	उस्ताद दारूल उलूम	भटकल, शिमूगा टुमकूर, मन्की, मुरड़ेश्वर
11	मौ0 शुऐब अहसन सा0 नदवी	7007367938 8960456786	उस्ताद दारूल उलूम	भटकल, शिमूगा टुमकूर, मन्की, मुरड़ेश्वर
12	मौ0 रशीद अहमद साहब नदवी	7795864313	उस्ताद दारूल उलूम	बंगलूर
13	मौ0 जुहैर अहसन साहब नदवी	9889258560	उस्ताद माहद (सिकरौरी)	बंगलूर
14	मौ0 मुफ़्ती मु0 मुस्तकीम सा0न0	9889096140	उस्ताद दारूल उलूम	आसनसोल, कोलकाता
15	मौ0 जमाल अहमद साहब नदवी	9450784350	कारकुन शो—बए—दावत व इरशाद	सुल्तानपुर, अमेठी, मुगलसराय व कोलकाता
16	क़ारी अब्दुल्लाह खाँ सा0 नदवी	9839748267	उस्ताद तजवीद दारूलउलूम	देहली
17	मौ0 मुहम्मद शुऐब नदवी	6394260480	मुहस्सिल शोबा	बनारस, भदोही, मिरजापुर
18	मौ0 मसऊद अहमद सा0 नदवी	9795715987	उस्ताद माहद (सिकरौरी)	कानपुर
19	मौ0 शकील अहमद सा0 नदवी	9305418153	कारकुन शिब्ली लाइब्रेरी	इलाहाबाद
20	मौ0 मुहम्मद अमजद सा0 नदवी	9616514320	उस्ताद दारूल उलूम	संभल व अतराफ

क्रमांक	अस्माए गिरामी (नाम)	मोबाइल नं0	उहदा (पद)	इलाक़ा या शहर
21	मौ0 मुहम्मद नसीम साहब नदवी	9670049411	उस्ताद माहद (महपतमऊ)	कानपुर, सन्डीला, गौसगंज, शाहजहांपुर
22	मौ0 बशीरुद्दीन साहब	9889438910	उस्ताद मक्तब	लखनऊ शहर
23	मौ0 इम्तियाज साहब नदवी	9984070892	उस्ताद माहद (महपतमऊ)	लखनऊ शहर
24	हाफिज़ मुबीन अहमद साहब	9839588696	उस्ताद मक्तब	लखनऊ शहर
25	मौ0 अब्दुल मतीन साहब नदवी	9450970865	उस्ताद दारूल उलूम	रामपुर, अमरोहा, मुरादाबाद
26	मौ0 शरफुद्दीन साहब नदवी	9936740835	मुहस्सिल शोबा	नागपुर, कानपुर
27	क़ारी माजिद अली साहब नदवी	9935626993	मुहस्सिल शोबा	सीतापुर, इन्दौर, भोपाल, उज्जैन
28	मौ0 साजिद अली साहब नदवी	8400015009	मुहस्सिल शोबा	कर्नाटक, आंबूर व गाजियाबाद
29	मौ0 अलीमुल्लाह साहब नदवी	9721413704	मुहस्सिल शोबा	मुम्बई, बस्ती, गोण्डा
30	मौ0 मुहम्मद रिजवान साहब कासमी	8401801990	मुहस्सिल शोबा	अहमदाबाद व दीगर अजला गुजरात, वापी, नौसारी, बेलसाड़
31	हाफिज़ अमीन असग़र साहब	9161219358	मुहस्सिल शोबा	अलीगढ़, आगरा, सहारनपुर, फिरोज़ाबाद, बुलन्दशहर, सिकन्द्राबाद
32	मौ0 अलीमुद्दीन साहब नदवी	8853258362	मुहस्सिल शोबा	खन्डवा, रतनागिरी, पूना, सितारा, कोल्हापुर, सूरत
33	मौ0 मुहम्मद मुस्लिम साहब मजाहिरी	8960513186	मुहस्सिल शोबा	औरंगाबाद, जालना, पूना, अहमदनगर, मुजफ्फरनगर, बनारस, मेरठ, बिजनौर, नजीबाबाद
34	डॉ0 मुहम्मद असलम सा0 नदवी	9956223293	उस्ताद माहद	पट्टन व आस पास
35	मौ0 अब्दुर्रहीम साहब नदवी	7388509803	मुहस्सिल शोबा	बाराबंकी, झांसी, मऊ, आजमगढ़ व अतराफ
36	मौ0 अब्दुल माजिद खाँ साहब	9918005726	मुहस्सिल शोबा	देहली
37	मौ0 मुहम्मद अक़ील साहब नदवी	9389868121	उस्ताद मक्तब शहर	सीवान, चम्पारन, दरभंगा, समस्तीपुर, पटना
38	मौ0 अबुल हयात सा0 नदवी	9795891123	उस्ताद मक्तब शहर	पटना व अतराफ
39	मौ0 अब्दुल कबीर साहब फारूक़ी	8853677677	उस्ताद मक्तब (महपतमऊ)	काकोरी व अतराफ लखनऊ
40	मौ0 उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ नदवी साहब	9935324928	नाजिर मतबख माहद सिकरौरी	गया, धनवाद, राँची, जमशेदपुर, झारखण्ड
41	मौ0 मोईनुर्रशीद साहब	8092652179	मुहस्सिल शोबा	बिहार के विभिन्न जिले और कोलकाता

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2024 To 2026
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 24 - Issue 01

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3